Rapid कहानियाँ

# शेक्सपियर की 5 सुपरहिट कहानियाँ

# शेक्सपियर
# की
# पाँच सुपर हिट कहानियाँ

महेश शर्मा

*अनुक्रम*

# द कॉमेडी ऑफ एरर्स

साइरेकस और एफेसस—दो परस्पर पड़ोसी देश थे। लेकिन अनेक मतभेदों के कारण दोनों देशों के राजा कट्टर शत्रु थे। किसी एक देश का नागरिक दूसरे देश में प्रविष्ट न हो, इसके लिए उन्होंने बड़ा सख्त कानून लागू कर रखा था। इसके अंतर्गत यदि साइरेकस का कोई नागरिक एफेसस की सीमा में मिल जाता था तो उसे एक हजार रुपए का जुर्माना भरना पड़ता था। जुर्माना न भरने की स्थिति में उस नागरिक का सिर काट दिया जाता था। इसलिए लोग सीमा पार करते हुए डरते थे। लेकिन जो इस कानून को नहीं जानते थे, उन्हें इसका दंड भुगतना पड़ता था।

साइरेकस में एजियन नामक एक व्यापारी रहता था। एक बार वह एफेसस में घूमते हुए पकड़ा गया। एफेसस के कानून के अनुसार उसे जुर्माना भरना था; लेकिन उसके पास देने के लिए कुछ भी नहीं था। अत: अंतिम निर्णय के लिए उसे राजा के सामने पेश किया गया।

''महाराज, यह व्यक्ति साइरेकस का रहनेवाला है। इसे हमने महल के पास पकड़ा है। परंतु जुर्माना भरने के लिए इसके पास कुछ नहीं है। अब आप ही बताएँ, इसे क्या दंड देना है?'' नगर कोतवाल ने सिर झुकाकर प्रश्न किया।

राजा ने एजियन को संबोधित करते हुए पूछा, ''तुम्हारा नाम क्या है?''

''एजियन।'' उसने सपाट स्वर में कहा।

''तुम पर लगाए गए आरोप सही हैं? क्या तुम नहीं जानते थे कि साइरेकस के लोगों पर एफेसस में आने की सख्त पाबंदी है?''राजा ने पुन: प्रश्न किया।

''जी हाँ। मुझे यहाँ के कानून के बारे में पता था।''वह निडर होकर बोला।

''फिर भी तुमने ऐसा अपराध किया? एजियन, कानून के अनुसार इस अपराध के लिए तुम या तो जुर्माना भरो या फिर मरने के लिए तैयार हो जाओ।''राजा ने अपना निर्णय सुना दिया।

व्यापारी करुण स्वर में बोला, ''महाराज, जितनी जल्दी हो सके, आप मुझे मृत्युंड दे दें, जिससे मैं सदा के लिए इस दुखी जीवन को त्याग सकूँ। मैं अब और जीना नहीं चाहता।''

एजियन की बात सुनकर राजा आश्चर्य से भर उठा। आज तक उसके सामने जितने भी अपराधी आए थे, सभी ने कोई-न-कोई बहाना बनाकर दंड न देने की प्रार्थना की थी। लेकिन यह पहला व्यक्ति था, जो अपने मुँह से दंड देने की बात कर रहा था। उसकी आँखों में दूर-दूर तक भय का नामोनिशान नहीं था। राजा आश्चर्य प्रकट करते हुए बोला, ''एजियन, ऐसी कौन सी बात है जिसके कारण तुम मौत को भी स्वीकार करने से पीछे नहीं हट रहे? मुझे बताओ, मैं तुम्हारे बारे में सबकुछ जानना चाहता हूँ।''

''महाराज, आप मेरे बारे में जानकर क्या करेंगे? मेरी कहानी इतनी दुख भरी है कि उसे सुनकर आपका मन भी काँप उठेगा। इसलिए बिना विलंब किए मुझे दंडित करें।''एजियन दुखी स्वर में बोला।

अब तो राजा के मन में उसके बारे में जानने की इच्छा और भी बलवती हो उठी। उसने दरबारियों की ओर देखा। वे भी उसके बारे में जानने के लिए उत्सुक हो रहे थे। उन्होंने पहली बार ऐसा निडर व्यक्ति देखा था, जो स्वयं मृत्यु माँग रहा था। अत: राजा पुन: बोला, ''एजियन, तुम निस्कोंच अपनी बात कहो। तुम्हारी कहानी सुने बिना हम तुम्हें कदापि दंडित नहीं कर सकते।''

तब एजियन अपनी कहानी सुनाने लगा—

एजियन के पिता साइरेकस के एक धनी व्यापारी थे। उनका व्यापार कई देशों में फैला था। उनकी मृत्यु के बाद

एजियन ने उनका सारा व्यापार सँभाल लिया। एक बार व्यापार के सिलसिले में उसे विदेश जाने का अवसर प्राप्त हुआ। उसने अपनी पत्नी को साथ लिया और माल से भरे जहाज के साथ अपिडैमनम नामक नगर में पहुँच गया। वह नगर उसे खूब रास आया। कुछ ही दिनों में उसका सारा माल बिक गया और उसके पास खूब धन जमा हो गया। उसने वापस लौटने का विचार त्याग दिया और पत्नी के साथ वहीं रहने लगा।

उसकी पत्नी गर्भवती थी। कुछ दिनों बाद उसने दो जुड़वाँ बेटों को जन्म दिया। दोनों बच्चे रंग-रूप और आकार में बिलकुल एक जैसे थे। उनमें अंतर करना एजियन और उसकी पत्नी के लिए भी बहुत कठिन था। उनके पड़ोस में एक गरीब त्री रहती थी। जिस दिन एजियन के घर पुत्रों का जन्म हुआ, उसी दिन उसने भी एक साथ दो पुत्रों को जन्म दिया। उसके पुत्र भी आकार और रंग-रूप में एक समान थे।

वह त्री इतनी निर्धन थी कि पुत्रों को खिलाने और पालने के लिए उसके पास कुछ नहीं था। उसका स्वयं का गुजारा बहुत मुश्किल से हो रहा था। ऐसे में उनका पालन-पोषण उसके लिए असंभव था। इसलिए उसने एजियन से प्रार्थना की कि वह उसके पुत्रों को गोद ले ले। एजियन की पत्नी का मन पिघल गया; उसके आग्रह पर उसने गरीब त्री के पुत्र गोद ले लिये। एजियन ने अपने दोनों बेटों का एक ही नाम रखा था—'एंटिफोलस'। गोद लिये पुत्रों का भी उसने एक ही नाम रखा। वह उन्हें 'ड्रोमियो' कहकर पुकारता था। इस प्रकार उसके पास चार शिशु हो गए थे।

एक बार व्यापार के सिलसिले में एजियन को दूसरे देश जाने का अवसर मिला। वह पत्नी और चारों बच्चों से बहुत प्रेम करता था। लंबे समय उनके बिना रहना उसके लिए असंभव था, इसलिए उसने उन्हें भी साथ ले लिया और जहाज पर सवार होकर दूसरे देश को चल पड़ा। कुछ महीनों की यात्रा के बाद उसे किनारा दिखाई देने लगा। 'एक-दो दिन के बाद हम किनारे पर होंगे। उसके बाद जहाज का सारा माल बेचकर हम घर लौट जाएँगे।'यह सोचकर एजियन मन-ही-मन प्रसन्न हो रहा था।

लेकिन ईश्वर को कुछ और ही मंजूर था। उसी रात समुद्र में भयंकर तूफान आ गया। ऊँची उठती लहरें जहाज को निगल जाने के लिए बेचैन हो उठीं। एक छोटा सा जहाज कब तक उनका सामना कर सकता था। देखते-ही-देखते उसका एक हिस्सा टूट गया। उसमें तेजी से पानी भरने लगा। यात्री समझ चुके थे कि जहाज कभी भी डूब सकता है, इसलिए जान बचाने के लिए वे छोटी-छोटी नावें लेकर पानी में उतर गए।

जहाज में सभी अकेले सफर कर रहे थे, इसलिए उन्होंने पीछे मुड़कर देखना जरूरी नहीं समझा। केवल एजियन अपने परिवार के साथ पीछे रह गया। उसने जल्दी से लकड़ी के दो-तीन फट्टों को जोड़कर दो नावें तैयार कीं। तत्पश्चात् उसने एक नाव में अपनी पत्नी, एक एंटिफोलस और एक ड्रोमियो को बिठा दिया। दूसरी नाव में वह शेष दोनों बच्चों को लेकर सवार हो गया।

कुछ दूरी तक दोनों नावें साथ-साथ तैरती रहीं। परंतु धीरे-धीरे जल की तेज धाराओं के कारण वे विपरीत दिशाओं की ओर बहते हुए दूर निकल गईं । तभी एजियन को एक नाव दिखाई दी। उसमें सवार मल्लाहों ने उसकी पत्नी और बच्चों को अपनी नाव में चढ़ा लिया। उन्हें सुरक्षित देखकर एजियन के चेहरे पर असीम शांति दिखाई देने लगी। कुछ देर बाद एक दूसरी नाव ने उसे और उसके बच्चों को भी बचा लिया था। परंतु उस दिन के बाद से वे एक-दूसरे से बिछुड़ गए। उसने अपनी पत्नी और बच्चों को ढूँढ़ने का बहुत प्रयास किया, लेकिन उनका कुछ पता नहीं चला।

थक-हारकर एजियन ने उनके मिलने की आशा छोड़ दी और अपना सारा ध्यान दोनों बेटों पर केंद्रित कर लिया। अब केवल वे ही उसके परिवारथे।

समय बीतता गया; एंटिफोलस और ड्रोमियो बड़े हो गए। एक बार एंटिफोलस ने पिता से अपनी माता के बारे में पूछा। एजियन उन्हें अतीत में घटी घटना की जानकारी नहीं देना चाहता था। लेकिन बार-बार पूछे जाने पर अंततः उसे

सारी बात बताई। उसी दिन से एंटिफोलस ने अपनी माता और भाइयों को ढूँढ़ने का निश्चय कर लिया। वह जोश में भरकर बोला, ''पिताजी, जब तक मैं अपनी माँ और भाइयों को ढूँढ़ नहीं लेता, मेरे मन को शांति नहीं मिलेगी। वे जहाँ भी होंगे, मैं उन्हें ढूँढ़कर रहूँगा। आप मुझे आशीर्वाद दें कि मैं इस कार्य में सफल हो सकूँ।''

एजियन अपनी पत्नी और दो बच्चों को पहले खो चुका था। उसमें इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह बेटों को अपने से दूर कर सके। परंतु एंटिफोलस जिद पर अड़ गया। अंतत: विवश होकर एजियन को अनुमति देनी पड़ी। दूसरे ही दिन वह ड्रोमियो को साथ लेकर उन्हें ढूँढ़ने निकल पड़ा। दिन गुजरते रहे। एजियन उनके लौटने की प्रतीक्षा कर रहा था।

लेकिन अनेक वर्ष बीत जाने के बाद भी वे नहीं लौटे। एजियन का मन किसी अनहोनी की आशंका से काँप उठता था। उससे नहीं रहा गया तो वह भी बेटों को ढूँढ़ने निकल पड़ा। उन्हें खोजते-खोजते वह एफेसस नगर में पहुँचा, जहाँ सिपाहियों ने उसे पकड़कर राजा के समक्ष पहुँचा दिया था।

एजियन की कहानी सुनकर राजा की आँखों से आँसू छलक आए। दरबार में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति भाव-विह्वल होकर उसे ही देख रहा था। राजा स्वयं को नियंत्रित करते हुए बोला, ''एजियन, मुझे दुख है कि भाग्य ने तुम्हारा सबकुछ छीन लिया। लेकिन ईश्वर क्या करना चाहता है, इसे हम कभी नहीं समझ सकते। मैं उससे प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हें तुम्हारा परिवार शीघ्र ही मिल जाए। एजियन, यद्यपि मैं कानून को नहीं बदल सकता, परंतु तुम्हें एक दिन की मोहलत अवश्य दे सकता हूँ। इस एक दिन में तुम जुर्माने का धन जुटाकर जमा करा दो। उसके बाद मैं तुम्हें स्वतंत्र कर दूँगा।''

राजा के इस निर्णय से एजियन पर कोई असर नहीं हुआ था। यह शहर उसके लिए बिलकुल अनजाना था। एक दिन तो क्या, वह एक महीने में भी एक हजार रुपए एकत्रित नहीं कर सकता था। यदि कोई उसे आवश्यक धनराशि दे देता तो भी उसे अपना जीवन व्यर्थ प्रतीत हो रहा था। इसलिए इस दिन में उसने धन एकत्रित करने की अपेक्षा अपने पुत्रों को ढूँढ़ना अधिक उचित समझा। वह महल से बाजार की ओर आ निकला। पुत्रों को ढूँढ़ने की यह उसकी अंतिम कोशिश थी। इसलिए वह अपना पूरा जोर लगा देना चाहता था।

उधर, वर्षों पूर्व एजियन की पत्नी और पुत्रों को बचाकर मल्लाह एफेसस शहर में ले आए थे। वहाँ एक दयालु और परोपकारी धनवान ने बालकों को गोद ले लिया। उसने पुत्रों की तरह उनका पालन-पोषण किया, खूब पढ़ाया-लिखाया और उनकी सुख-सुविधा का पूरा ध्यान रखा। युवा होने पर अपनी योग्यता के कारण शीघ्र ही वे सेना में ऊँचे-ऊँचे पदों पर नियुक्त हो गए। फिर एंटिफोलस ने वहीं की एक सुंदर और कुलीन लड़की के साथ विवाह कर लिया। इस प्रकार दोनों भाई एफेसस में ही सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे थे। उनके पिता और भाई जीवित हैं, इस बात से वे पूरी तरह अनजान थे।

संयोगवश जिस दिन एजियन को बंदी बनाया गया, उसी दिन छोटा एंटिफोलस और ड्रोमियो भी भटकते-भटकते एफेसस पहुँच गए। शहर में प्रवेश करते ही उन्होंने सुना कि एक व्यक्ति को एफेसस में गैर-कानूनी ढंग से प्रवेश करने के कारण पकड़ा गया है। लेकिन उन्होंने इसकी कल्पना तक नहीं की थी कि वह व्यक्ति उनका पिता होगा।

कुछ दिन वहाँ ठहरने का निश्चय कर वे एक सराय में पहुँचे। सराय के मालिक ने उनका परिचय पूछा तो उन्होंने स्वयं को उसी शहर का नागरिक बताया। उसने रहने के लिए उन्हें एक कमरा दे दिया। कुछ देर विश्राम करने के बाद एंटिफोलस ने ड्रोमियो को आवश्यक वस्तुएँ खरीदने बाजार भेजा। उसके बाद शहर की जानकारी पाने के लिए वह भी सराय से निकल पड़ा।

तभी एंटिफोलस को ड्रोमियो दिखाई दिया। वह तेज-तेज चलता हुआ उसकी ओर आ रहा था। एंटिफोलस सोच में पड़ गया कि उसे बाजार गए अभी थोड़ी देर हुई है, यह इतनी जल्दी कैसे लौट आया? उसने ड्रोमियो के थैले की ओर देखा, परंतु वह खाली हाथ था। यह देखकर वह क्रुद्‌ध हो गया।

लेकिन इससे पहले कि वह उसे डाँटता, ड्रोमियो बड़े कोमल स्वर में बोला, ''कप्तान साहब, आप यहाँ क्या कर रहे हैं? चलिए, घर चलिए। आपकी पत्नी भोजन के लिए आपकी प्रतीक्षा कर रही हैं।''

उसकी बात सुनकर एंटिफोलस चौंक पड़ा, फिर गुस्से से भरकर बोला, ''ड्रोमियो, तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है ! ये कैसी बहकी-बहकी बातें कर रहे हो? मेरा विवाह ही नहीं हुआ तो पत्नी कहाँ से आ गई? ड्रोमियो, यह हँसी-मजाक का समय नहीं है। मैंने तुम्हें सामान लाने भेजा था, खाली हाथ क्यों लौट आए?''

इस बार ड्रोमियो चौंकते हुए बोला, ''मैं भला आपसे मजाक क्यों करूँगा? आपकी पत्नी भोजन के लिए बुला रही हैं। इसमें मजाक कहाँ से आ गया। आप किस सामान की बात कर रहे हैं? आपने कौन सा सामान लाने के लिए कहा था?''

''अच्छा, अब तुम्हें यह भी याद नहीं कि मैंने तुम्हें क्या लाने के लिए कहा था? ड्रोमियो, बहुत मजाक हो गया। अब चुपचाप जाकर अपना काम निपटाओ। और यह बार-बार पत्नी-पत्नी मत चिल्लाओ। मेरी कोई पत्नी नहीं है।''एंटिफोलस ने उसे झिड़कते हुए कहा।

वास्तव में वह बड़ा ड्रोमियो था, जो छोटे एंटिफोलस को बड़ा एंटिफोलस समझ रहा था। इधर, एंटिफोलस बड़े ड्रोमियो को छोटा ड्रोमियो समझकर उसे डाँट रहा था। इस प्रकार दोनों एक-दूसरे के गलत समझ बैठे।

एंटिफोलस का अजीब व्यवहार देखकर ड्रोमियो ने सोचा कि अवश्य कप्तान साहब अपनी पत्नी से लड़कर आए हैं, इसलिए गुस्से में हैं। लेकिन भाभी ने मुझे इन्हें लाने के लिए कहा है। इसलिए मैं इन्हें लेकर ही जाऊँगा। यही सोचकर वह उससे घर चलने की प्रार्थना करने लगा।

आखिरकार एंटिफोलस चिढ़ गया और बड़े ड्रोमियो का हाथ पकड़ते हुए बोला, ''लगता है, तेरे दिमाग का इलाज करवाना पड़ेगा। यह जानते हुए भी कि अभी मेरा विवाह नहीं हुआ है, बार-बार पत्नी-पत्नी बोल रहा है। चल, पहले उस लड़की से मिलता हूँ, जिसे तू मेरी पत्नी बता रहा है। उसके बाद उसे सीधा करूँगा।''

यह कहकर वह ड्रोमियो के साथ चल पड़ा।

रास्ते में बाजार पड़ता था। उस समय वहाँ बहुत चहल-पहल थी। इस भीड़ में एंटिफोलस और ड्रोमियो अलग-अलग हो गए। एंटिफोलस ने इधर-उधर देखा, लेकिन ड्रोमियो कहीं दिखाई नहीं दिया। तभी उससे छोटा ड्रोमियो टकरा गया। वह उसे डाँटते हुए बोला, ''कहाँ चला गया था मुझे भीड़ में छोड़कर? चल, कहाँ लेकर चल रहा था तू मुझे?''

ड्रोमियो आँखें झपकाते हुए बोला, ''भूल गए क्या? आपने ही तो सामान लाने बाजार भेजा था। और मैं आपको सराय में छोड़कर आया था। आप यहाँ क्या कर रहे हैं?''

एंटिफोलस का पारा ऊपर जा पहुँचा—''ड्रोमियो, सराय से तुम मुझे यह कहकर लाए थे कि मेरी पत्नी खाने के लिए बुला रही है और यहाँ आकर कह रहे हो कि तुम यहाँ सामान खरीदने आए हो। मुझे ऐसा बेहूदा मजाक पसंद नहींहै।''

''मैंने कब कहा कि आपकी पत्नी बुला रही हैं? क्या मैं नहीं जानता कि अभी आप वुँक्तवारे हैं। जरूर आपको कोई गलतफहमी हो गई है।''ड्रोमियो धीरे से बोला।

इधर ये दोनों बाजार में उलझे पड़े थे, उधर कप्तान की पत्नी अपने पति की प्रतीक्षा कर रही थी। ड्रोमियो अभी तक कप्तान साहब को लेकर नहीं आया था, यही सोचकर वह परेशान हो रही थी। जब समय अधिक हो गया तो वह स्वयं पति को घर लाने के लिए चल पड़ी।

बाजार में पहुँचते ही उसने छोटे एंटिफोलस और छोटे ड्रोमियो को परस्पर बातें करते हुए देखा। वह उसे कप्तान समझ बैठी और पास आकर बोली, ''आप यहाँ क्या रहे हैं? मैंने आपको भोजन के लिए बुलाया था। लेकिन लगता है, आप कुछ ज्यादा ही नाराज हैं, इसलिए बुलाने पर भी नहीं आए।''

एक युवती के मुख से अपने लिए पति शब्द सुनकर एंटिफोलस चौंक पड़ा। उस समय आसपास खड़े लोग उसी

ओर देख रहे थे। एक अनजान युवती उसे पति पुकारे, यह उसके लिए असहनीय था। वह क्रोध से भड़क उठा और तमकते हुए बोला, ''कौन हो तुम, जो मुझे बार-बार पति कहकर संबोधित कर रही हो? मेरी कोई पत्नी नहीं है।''

युवती पल भर के लिए हक्की-बक्की रह गई। फिर संयत होते हुए बोली, ''आप चाहे कुछ भी कहें, परंतु इस सच को नहीं बदल सकते कि आप मेरे पति हैं। इस प्रकार बीच बाजार में झगड़ना उचित नहीं है। अच्छा यही होगा कि आप मेरे साथ घर चलें। वहीं चलकर हम शांति से बात करेंगे। चलो ड्रोमियो, तुम्हारी पत्नी भी तुम्हारा इंतजार कर रही है।''

एंटिफोलस कुछ समझ नहीं पा रहा था। वह सिर खुजलाते हुए सोचने लगा कि 'परदेश में वह बड़ी विकट स्थिति में फँस गया है। यह युवती स्वयं को उसकी पत्नी बता रही है और ड्रोमियो को भी उसकी पत्नी के पास चलने को कह रही है। मुझे किसी तरह इस त्री से स्वयं को बचाना होगा।'

इससे पहले कि वह कुछ कहे, पास खड़ा एक आदमी बोल पड़ा, ''साहब, क्यों घर की बात बाजार में उछाल रहे हैं? अगर आपकी पत्नी से कोई गलती हो गई हो तो घर जाकर उसे समझा दें। ऐसे नाराज होकर उसे अपशब्द कहना आप जैसे पढ़े-लिखे व्यक्ति को शोभा नहीं देता।''

कुछ और लोगों ने भी उसकी बात का समर्थन किया।

स्थिति और विकट हो गई थी। अभी तक तो केवल युवती ही उसके पीछे पड़ी थी, किंतु अब राह चलते लोग भी उसकी बात का समर्थन कर रहे थे। एंटिफोलस समझ गया कि यदि वह युवती के साथ नहीं गया तो मामला बिगड़ सकता है। वैसे भी वह परदेसी है। कहीं लेने के देने न पड़ जाएँ, यह सोचकर उसने युवती के साथ जाने का मन बना लिया।

युवती ने उसका हाथ पकड़ा और खींचते हुए घर की ओर चल पड़ी। एंटिफोलस भारी कदमों से उसके पीछे चल रहा था। ड्रोमियो भी उनके साथ था।

घर पहुँचकर युवती ने एंटिफोलस को प्रेम से एक कुरसी पर बिठाया और ड्रोमियो से बोली, ''जाओ, तुम भी जाकर खाना खा लो। तुम्हारी पत्नी कब से भूखी-प्यासी बैठी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है।''

यह कहकर वह एंटिफोलस के पास आकर बैठ गई और प्रेम भरी बातें करते हुए अपने हाथों से उसे खाना खिलाने लगी। वह अनमने मन से खाने का कौर गले से नीचे उतारने लगा।

उधर, ड्रोमियो जैसे ही रसोईघर में पहुँचा, एक नौकरानी 'स्वामी, स्वामी' कहकर उससे लिपट गई। छोटा ड्रोमियो छिटककर दूर खड़ा हो गया। डर से उसकी साँसें तेज-तेज चलने लगीं। सारा माजरा उसकी समझ से बाहर था। नौकरानी आश्चर्य से बोली, ''आज तुम्हें क्या हो गया है? तुम ऐसा व्यवहार क्यों कर रहे हो? मेरे लिपटने से तुम ऐसे छिटके जैसे किसी दूसरे की पत्नी को गले से लगाया हो। चलो, अब चलकर खाना खा लो।''

बाहर एंटिफोलस चुपचाप खाना खा रहा था, इसलिए उसे भी भोजन करने में कोई आपत्ति नहीं थी। वह आसन जमाकर बैठ गया और लगा भोजन करने।

इतनी देर में बड़ा एंटिफोलस और बड़ा ड्रोमियो घर लौट आए तथा दरवाजा खटखटाने लगे। परंतु किसी ने दरवाजा नहीं खोला। बहुत देर तक बाहर खड़े रहने के बाद बड़ा एंटिफोलस बोला—''लगता है, घर देर से आने के कारण बीवियाँ हमसे नाराज हो गई हैं। इसलिए उन्हें मनाने के लिए हमें कुछ उपहार ले आने चाहिए।''

ड्रोमियो ने उसकी बात का समर्थन किया और फिर वे दोनों वापस बाजार की ओर चल दिए।

इधर, भोजन करने के बाद छोटा एंटिफोलस और ड्रोमियो वहाँ से निकल भागने की बात सोचने लगे। थोड़ी देर बाद जब दोनों स्त्रियाँ गहरी नींद में सो गईं तो वे धीरे से उठे और वहाँ से भाग निकले।

अभी छोटा एंटिफोलस कुछ ही दूर गया था कि मार्ग में उससे एक सुनार टकरा गया। वह मुसकराते हुए उसके पास आया और एक डिब्बा पकड़ाते हुए बोला, ''लीजिए कप्तान साहब, अपनी अमानत सँभालिए। मैं इसे देने आपके घर जा रहा था, अच्छा हुआ कि आप यहीं मिल गए। यह रत्नजड़ित सोने का हार आपको पूरे शहर में कहीं नहीं मिलेगा। आप इस हार की कीमत दुकान पर ही भिजवा देना।'' यह कहकर वह व्यक्ति चला गया।

एंटिफोलस हैरान-सा खड़ा हुआ था। बार-बार उसके दिमाग में सुबह से घटित होनेवाली घटनाएँ घूम रही थीं। वह इस शहर में पहली बार आया था, लेकिन हर कोई उसके साथ ऐसे व्यवहार कर रहा था मानो उसे वर्षों से जानता हो। सुनार भी बिना किसी जान-पहचान के उसे इतना कीमती हार सौंप गया था।

तभी वहाँ से एक बुढ़िया गुजरी। वह छोटे एंटिफोलस को आशीर्वाद देते हुए बोली, ''बेटा, तुम्हारे ही कारण मेरा बेटा निर्दोष साबित होकर जेल से छूटा है। भगवान् तुम्हें लंबी उम्र दें।''

बुढ़िया के जाने के बाद वहाँ एक युवक आया और बड़े प्रेम से उसके साथ मिला। वह युवक भी उसके साथ परिचितों जैसा व्यवहार कर रहा था। तभी एक व्यक्ति ने आकर उसे अपने पुत्र की शादी का निमंत्रण-पत्र थमाया और परिवार सहित विवाह में आने के लिए कहा। एक अन्य व्यक्ति उसे मुहरों की थैली पकड़ाते हुए बोला, ''कप्तान साहब,

आपने वक्त पर मेरी सहायता कर मुझे उबार लिया। आज मैं जो कुछ हूँ, आपके कारण हूँ। यह लीजिए, अपना धन स्वीकार कीजिए।''

यह सब क्या हो रहा है, एंटिफोलस की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। वास्तव में बड़ा एंटिफोलस इसी शहर में पढ़-लिखकर बड़ा हुआ था। इसलिए शहर के लगभग सभी व्यक्ति उसे अच्छी तरह से जानते थे। छोटा एंटिफोलस बिलकुल अपने भाई जैसा था। यही कारण था कि लोग उसे कप्तान साहब समझ रहे थे।

अभी वह कुछ ही कदम चला था कि एक लड़की उसके पास आकर लाड़ करते हुए बोली, ''भैया! आपने मेरा हार बनवा दिया? लाओ, कहाँ है हार? मैं बड़ी बेसब्री से उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। ओह, तो इस डिब्बे में है मेराहार।''

जैसे ही लड़की उसके हाथ से डिब्बा लेने लगी, एंटिफोलस गुस्से से बेकाबू हो गया। उसने उसका हाथ छिटक दिया और चीखते हुए बोला, ''मैं कल ही इस शहर में आया हूँ और एक दिन में मेरे इतने रिश्तेदार पैदा हो गए! कोई खुद को मेरी पत्नी बताती है तो कोई बहन। सच-सच बताओ, कौन हो तुम? मुझे तो ऐसा लगता है कि तुम सब मिलकर मुझे ठग लेना चाहते हो।''

यह कहकर एंटिफोलस वहाँ से भाग खड़ा हुआ। लड़की ने सोचा कि किसी सदमे के कारण उसका भाई उसे नहीं पहचान पा रहा है। वह उसी समय तेजी से घर की ओर भागी। वहाँ पहुँचते ही उसने भाभी को रोते हुए बताया, ''भाभी, भैया पागल हो गए हैं। उन्होंने मुझे पहचानने से इनकार कर दिया।''

''तुम यह क्या कह रही हो? कहाँ मिले तुम्हें कप्तान साहब? शायद तुम ठीक कह रही हो। उन्होंने मुझे भी पहचानने से इनकार कर दिया। न जाने कैसी बहकी-बहकी बातें कर रहे थे! बार-बार कह रहे थे कि मैं शहर में नया आया हूँ; तुम मुझे फँसाने की कोशिश कर रही हो।''कप्तान की पत्नी दुखी स्वर में बोली।

''भैया अभी-अभी बाजार की ओर गए हैं। आप जल्दी से जाकर उन्हें घर ले आएँ। कहीं पागलपन में वह कुछ उलटा-सीधा न कर बैठें।''

कप्तान की पत्नी उसी समय बाजार की ओर दौड़ पड़ी। उस समय बड़ा एंटिफोलस उपहार खरीदने के लिए सुनार की दुकान पर पहुँचा और हार दिखाने के लिए कहा। सुनार हँसते हुए बोला, ''कप्तान साहब, लगता है, आप आजकल कुछ ज्यादा खरीदारी कर रहे हैं। मैं आपको अभी हार दिखाता हूँ, परंतु पहले पिछला उधार चुका देते तो ठीक रहता।''

''पिछला उधार। किस उधार की बात कर रहे हो? मैंने कौन सी चीज तुमसे उधार ली है?''कप्तान ने आश्चर्य में भरकर पूछा।

''इतनी जल्दी भूल गए? थोड़ी देर पहले ही तो मैंने आपको रत्नजड़ित सोने का हार थमाया था।''

''थोड़ी देर पहले! क्या बात कह रहे हो तुम? आज यह हमारी पहली मुलाकात है। तुमने जरूर किसी और को हार पकड़ा दिया होगा। मैं आज सुबह इस ओर आया ही नहीं।''कप्तान ने पुनः कहा।

''कप्तान साहब, ऐसा मजाक अच्छा नहीं है। मैंने खुद आपको वह हार दिया था। मेरी आँखें धोखा नहीं खा सकतीं।''इस बार सुनार उत्तेजित हो गयाथा।

धीरे-धीरे दोनों का झगड़ा बढ़ता गया। अंततः बात थाने तक पहुँची। थानेदार ने दोनों को जेल में डाल दिया।

उधर, कप्तान की पत्नी उसे खोजती हुई सुनार की दुकान पर पहुँची। वहाँ उसे पता चला कि उसके पति को पुलिस पकड़कर ले गई है। वह उसी क्षण थाने जा पहुँची और थानेदार से बोली, ''मेरे पति बिलकुल निर्दोष हैं। वे कोई अपराध नहीं कर सकते। अवश्य अनजाने में उनसे कोई भूल हो गई होगी। वैसे भी आज सुबह से वे अजीब सा व्यवहार कर रहे हैं। ऐसा लगता है जैसे उन्हें पागलपन का दौरा पड़ा है। आप उन्हें छोड़ दें, जिससे मैं उनका इलाज करवा सकूँ।''

थानेदार को उसकी बातों पर विश्वास हो गया और उसने कप्तान को पागल समझकर छोड़ दिया।

घर आकर कप्तान की पत्नी ने नौकरों से कहा, ''कप्तान साहब को इसी समय रस्सी और जंजीरों से बाँधकर कमरे में बंद कर दो। ये पागल हो गए हैं। मैं अभी डॉक्टर को बुलाकर इनका इलाज करवाती हूँ।''

एंटिफोलस चीख-चीखकर कहता रहा कि वह पागल नहीं है; लेकिन किसी ने उसकी एक न सुनी। उसे कमरे में बंद करके कप्तान की पत्नी डॉक्टर को लेने चली गई।

जब वह डॉक्टर को लेकर घर लौट रही थी तो बाजार में उसे छोटा एंटिफोलस दिखाई दिया। उसने समझा कि किसी तरह खुद को छुड़ाकर वह घर से भाग आया है।

''डॉक्टर साहब, वे रहे मेरे पति। वे रहे मेरे पति।''फिर वह उसे पुकारते हुए दौड़ पड़ी, ''कप्तान साहब, कप्तान साहब!''

एंटिफोलस ने जब आवाज की दिशा में देखा तो उसे कप्तान की पत्नी दिखाई दी। उसे अपनी ओर आते देखकर उसके होश उड़ गए। वह समझ गया कि यह त्री फिर उसे जबरदस्ती अपने घर ले जाएगी। अत: उसने आव देखा न ताव, सिर पर पैर रखकर विपरीत दिशा की ओर भाग लिया।

उसे भागते देख कप्तान की पत्नी चिल्लाई, ''पकड़ो उन्हें! भगवान् के लिए पकड़ो उन्हें! वे पागल हैं।''

छोटा एंटिफोलस अपने लिए 'पागल' शब्द सुनकर घबरा गया। वह तेजी से भागता हुआ एक मंदिर में जा छिपा। मंदिर में एक पुजारिन रहती थी। एंटिफोलस ने उसे अपनी सारी कहानी संक्षेप में बताकर सहायता करने की प्रार्थना की। उसने यह भी बता दिया कि एक चालाक औरत जबरदस्ती उसे अपना पति बनाकर घर ले जाना चाहती है। वह पुजारिन के पैरों में गिर पड़ा और रोते हुए बोला, ''माँ, इस दुष्ट औरत से मेरी रक्षा करो।''

'माँ' शब्द सुनते ही पुजारिन के मन में प्रेम और ममता का सागर उमड़ आया। उसने एंटिफोलस के सिर पर हाथ फेरा और स्नेह भरे स्वर में बोली, ''डरो मत बेटे, वह तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ पाएगी। तुम पासवाले कमरे में जाकर छिप जाओ। मैं सबकुछ सँभाल लूँगी।''

वह शीघता से साथवाले कमरे में छिप गया। तभी मंदिर में कप्तान की पत्नी आई और हाँफते हुए बोली, ''माँ, मेरे पति इसी ओर आए हैं। आपने उन्हें जरूर देखा होगा। कृपया बताएँ कि वे कहाँ हैं? उनकी मानसिक दशा ठीक नहीं है। मैं उन्हें घर ले जाना चाहती हूँ।''

पुजारिन उसे समझाते हुए बोली, ''बेटी, वह तुम्हारा पति नहीं है। अवश्य तुम्हें कोई गलतफहमी हुई है। मैं उसे तुम्हारे हवाले कभी नहीं कर सकती। अच्छा यही होगा कि तुम यहाँ से चली जाओ।''

परंतु कप्तान की पत्नी अड़ गई। बिना पति को लिये वह वहाँ से नहीं लौट सकती थी। उसने जोर-जोर से रोना शुरू कर दिया। उसका रोना सुनकर वहाँ भीड़ लगने लगी। लोग दबी जुबान में तरह-तरह के सवाल करने लगे। इस प्रकार पूरे नगर में हड़कंप मच गया था।

उधर, राजा द्वारा एजियन को दी गई समय-सीमा समाप्त हो गई थी। उसने अभी तक जुर्माना नहीं दिया था, अत: राजा ने उसे फाँसी पर लटकाने का निश्चय कर लिया। लेकिन वहाँ का नियम था कि राजा फाँसीघर जाकर ही फाँसी देने की सजा सुनाता था। शहर का एकमात्र फाँसीघर उस मंदिर के पास ही बना हुआ था, जहाँ पुजारिन और कप्तान की पत्नी के बीच विवाद चल रहा था। जमा लोग इस तमाशे का आनंद ले रहे थे।

घर पर बड़ा एंटिफोलस भी नौकरों की आँखों में धूल झोंककर भाग निकला था। नौकर उसका पीछा कर रहे थे, अत: वह मंदिर के बाहर खड़ी भीड़ में जा छिपा। तभी कप्तान की पत्नी की नजर उस पर पड़ी। उसने उसे पकड़ लिया और प्रसन्न होकर बोली, ''मुझे मेरे पति मिल गए हैं। मुझे मेरे पति मिल गए हैं।''

एंटिफोलस को बाहर देखकर पुजारिन भी आश्चर्यचकित रह गई। 'उसने उसे कमरे में छिपाया था और बाहर

आनेवाले रास्ते पर वह खड़ी थी। फिर वह बाहर कैसे आ गया?’यह सोचकर उसका चेहरा पसीने से भर उठा। वह तेजी से अंदर गई और छोटे एंटिफोलस को लेकर बाहर आ गई।

उसे देखते ही आस-पास खड़े लोग स्तब्ध रह गए। कप्तान की पत्नी कभी अपने पति को देखती तो कभी पुजारिन के साथ खड़े एंटिफोलस को। उसका चेहरा घबराहट और आश्चर्य से भर गया था। दो अपरिचित व्यक्तियों के चेहरे, रंग-रूप और कद-काठी एक समान कैसे हो सकती हैं?सभी इस रहस्य को जानने के लिए बेचैन हो रहे थे।

तभी राजा का काफिला उस ओर आ निकला। सबसे आगे कैदी की वेशभूषा पहने एजियन चल रहा था। छोटा एंटिफोलस उसे देखते ही पहचान गया और दौड़कर उसके गले से लग गया। पुत्र को देखकर एजियन की आँखों से भी आँसू बहने लगे। बड़ा एंटिफोलस दूर खड़ा सब देख रहा था। चूँकि बचपन से उसने पिता को नहीं देखा था, इसलिए वह उसे नहीं पहचान सका।

पिता-पुत्र के इस मिलन को देखकर राजा सारी बात समझ गया। उसने कप्तान एंटिफोलस को बुलाया और उसे एजियन की सारी कहानी सुनाई। अब कप्तान एंटिफोलस भी भावुक हो उठा और आगे बढ़कर पिता के गले से लग गया। तभी पास खड़ी वृद्धा पुजारिन रोते हुए बोली, ‘‘स्वामी, आप कहाँ चले गए थे? आपके जाने के बाद मेरे पुत्र भी मुझसे दूर हो गए। मैं, आपकी अभागी पत्नी तभी से आपके वियोग में तड़प-तड़पकर दिन गुजार रही हूँ।’’

इतने वर्षों बाद पत्नी को देखकर एजियन की खुशी का ठिकाना न रहा। तभी दोनों ड्रोमियो भी वहाँ आ गए। एजियन और उसकी पत्नी ने उन्हें भी प्यार से गले लगा लिया। इस प्रकार एजियन को उसकी पत्नी और चारों पुत्र एक साथ मिल गए। इस बीच कप्तान की पत्नी भी सारी बात समझ चुकी थी। उसने सास-ससुर के पैर छूकर आशीर्वाद लिया। उनमें जो गलतफहमी हुई थी, वह दूर हो गई।

फिर कप्तान एंटिफोलस ने राजा से प्रार्थना की कि वह पूरा जुर्माना भरने को तैयार है, लेकिन उसके पिता को छोड़ दिया जाए। लेकिन राजा ने बिना जुर्माना लिये एजियन को मुक्त कर दिया। इसके बाद वह पूरा परिवार सुखपूर्वक एक साथ रहने लगा।

❑

# तूफान

समुद्र के बीचोबीच एक विशाल टापू था। उस टापू पर प्रासपरो नामक एक व्यक्ति अपनी बेटी मिरांडा के साथ रहता था। वह टापू अनेक जीव-जंतुओं से भरा पड़ा था और मनुष्य के नाम पर वहाँ केवल वे दोनों ही रहते थे। एक पहाड़ी गुफा में उनका बसेरा था। मिरांडा की आयु लगभग तेरह वर्ष की थी। जब से उसने होश सँभाला, तब से वह न तो कभी टापू से बाहर गई थी और न ही किसी को वहाँ आते देखा था। वह टापू उसका संसार था। वहाँ के जीव-जंतु उसके साथी थे। उसका सारा समय इन्हीं के साथ खेलने में बीतता था।

प्रासपरो एक महान् जादूगर और तांत्रिक था। उसके पास कुछ पुराने ग्रंथ, किताबें तथा काले रंग की एक छड़ी थी। उसका अधिकतर समय उन ग्रंथों को पढ़ने में बीतता था। वह मिरांडा से बहुत प्यार करता था और उसकी सुख-सुविधाओं का पूरा ध्यान रखता था। उसके पालन-पोषण में उसने कोई कमी नहीं छोड़ी थी।

प्रासपरो बड़ी अजीबो-गरीब हरकतें किया करता था। कभी किसी अदृश्य शक्ति के साथ वह घंटों बातें करता तो कभी आकाश की ओर मुँह करके एकटक उसे निहारता रहता। जब कभी वह काली छड़ी को हाथ में लेकर अपने सिर के चारों ओर घुमाता तो आस-पास भयंकर घटनाएँ घटित होने लगतीं। आसमान में काले बादल घुमड़ आते, तेज हवाएँ चलने लगतीं, समुद्र में भयंकर तूफान उठ खड़ा होता, लहरें किनारों से टकराकर आसमान छूने लगतीं।

स्पष्ट कहा जाए तो आँधी-तूफान उसके इशारों पर काम करनेवाले गुलाम थे। इसके अतिरिक्त टापू पर रहनेवाले जानवर और प्रेतात्माएँ भी उसकी आज्ञा का पालन करती थीं। प्रासपरो जब होंठों को सिकोड़कर एक अजीब सी आवाज निकालता तो देखते-ही-देखते उसके आस-पास बहुत सी प्रेतात्माएँ प्रकट हो जाती थीं। वे उसके सैनिक थे और उसकी हर प्रकार से सहायता करते थे। इनमें सबसे शक्तिशाली प्रेत का नाम एरियल था। उसके लिए कोई भी काम असंभव नहीं था। वह पलक झपकते ही मीलों दूर पहुँच जाता था। प्रासपरो अपने इस प्रेत को सबसे अधिक प्यार करता था।

एक दिन प्रासपरो हरी घास पर लेटा हुआ था। पास ही मिरांडा तितलियाँ और खरगोशों के साथ खेल रही थी। ठंडी हवाओं के झोंकों से उसे नींद आ गई और कुछ ही देर में वह खर्राटे भरने लगा।

सहसा वह 'बदला-बदला' चीखते हुए उठ बैठा। वह पसीने से पूरी तरह भीग चुका था; उसकी साँसें धौंकनी के समान चल रही थीं; आँखों में जैसे लहू उतर आया था। वह खड़ा हुआ और क्रुद्ध होकर समुद्र की ओर देखने लगा।

प्रासपरो अपनी सभी तंत्र क्रियाएँ मिरांडा से छिपकर करता था। वह नहीं चाहता था कि उसके दिल और दिमाग पर इसका बुरा असर पड़े। लेकिन आज उसे किसी बात का ध्यान नहीं रहा। उसकी सुर्ख आँखें दूर समुद्र में तैरते एक छोटे से जहाज को देख रही थीं।

कुछ ही पल बीते थे कि दूर-दूर तक शांत दिखनेवाले समुद्र में एक जलजला-सा उठ खड़ा हुआ। चारों ओर काले-काले बादल घिर आए; लहरें भयंकर शोर करते हुए आसमान की ओर उठने लगीं; तेज हवाओं ने जल में भँवर पैदा कर दिए; बिजली कड़कते हुए जमीन पर गिरने के लिए आतुर हो उठी।

समुद्र की विशाल लहरों के बीच जहाज कागज की नाव की तरह लहराने लगा। कभी वह दाईं ओर झुक जाता तो कभी बाइऔ ओर। प्रासपरो अभी भी उसे एकटक देख रहा था। ऐसा लग रहा था मानो वह अपनी पूरी शक्ति को वेंक्तद्रित करके जहाज को डुबो देना चाहता हो।

इस कशमकश के बीच आखिरकार लहरों की विजय हुई और वे जहाज को तिनके की तरह बहाकर कहीं दूर ले गईं। जहाज के अदृश्य होते ही प्रासपरो के चेहरे पर संतोष के भाव दिखाई देने लगे। वह जोर-जोर से हँसने लगा।

दूर खड़ी मिरांडा इस दृश्य को देख रही थी। समुद्र के भयंकर रूप को देखकर उसका बाल-मन भय से काँपने लगा। वह दौड़कर आई और पिता के पैरों से लिपट गई।

''मिरांडा! मेरी बच्ची।''यह कहकर प्रासपरो ने उसे गोद में उठा लिया और स्नेहवश उसके सिर पर हाथ फेरने लगा।

मिरांडा डरते-डरते बोली, ''पिताजी, यह सब क्या था? मुझे बहुत डर लग रहा है।''

''डरो मत, मिरांडा,''प्रासपरो ने उसका चेहरा समुद्र की ओर किया और उँगली से संकेत करते हुए बोला,''तुम्हें वह चमकीली वस्तु दिखाई दे रही है? उसे जहाज कहते हैं।''

''जी पिताजी!''मिरांडा ने उँगली की दिशा में देखकर सहमति में सिर हिलाया।

''उसे यहाँ लाने के लिए ही मैंने अपने जादू से समुद्र में तूफान उठाया था।''प्रासपरो ने धीरे से कहा।

''लेकिन आपने ऐसा क्यों किया, पिताजी?''मिरांडा डरते हुए बोली,''वह जहाज डूबने वाला है। उसके यात्री सहायता के लिए पुकार रहे हैं। भगवान् के लिए तूफान को रोक दें पिताजी, नहीं तो सब मारे जाएँगे।''

प्रासपरो कठोर स्वर में बोला,''मिरांडा, यदि तुम्हें सच पता होता तो तुम मुझे कभी तूफान रोकने के लिए नहीं कहतीं। तुम नहीं जानतीं कि उस जहाज में बैठे यात्री कौन हैं?''

मिरांडा ने उत्सुकतावश पूछा, ''वे कौन हैं, पिताजी? और आप उन्हें कैसे जानते हैं?''

''बेटी, आज तक मैंने तुमसे एक रहस्य छिपाकर रखा है। यह रहस्य हमारे अतीत से संबंधित है। परंतु आज मैं तुम्हें उसके बारे में सबकुछ बताऊँगा; क्योंकि उनके यहाँ आने से पहले तुम्हें जान लेना चाहिए कि वे कौन हैं और उनसे हमारा क्या संबंध है? तभी तुम पूरी बात ठीक से समझ पाओगी।''

प्रासपरो मिरांडा को लेकर वहीं एक ओर बैठ गया और अतीत के पन्नों को खोलते हुए बोला,''यहाँ से बहुत दूर समुद्र के दूसरे किनारे पर मिलॉन नामक एक बहुत खूबसूरत और सुंदर देश है। आज से दस वर्ष पहले मैं वहाँ का राजा था। उस समय तुम तीन साल की थीं। तुम्हें जन्म देने के कुछ दिनों बाद ही तुम्हारी माँ स्वर्ग सिधार गई थी। तभी से मैं पिता के साथ-साथ माँ बनकर तुम्हारा पालन-पोषण कर रहा हूँ। हमारे पास नौकर-चाकर, धन-दौलत, हाथी-घोड़े; सबकुछ था। तुम मेरी एकमात्र संतान थीं, इसलिए मैं तुम्हें लेकर अधिक चिंतित रहता था। मेरा अधिकांश समय तुम्हारी देखभाल में बीतता था। शेष समय में पुराने ग्रंथ और किताबें पढ़ना मेरा शौक था। मेरा एंटोनियो नामक एक छोटा भाई भी था। वह बड़ा बुद्धिमान, साहसी और कूटनीतिज्ञ था। इसलिए राजकाज की सारी जिम्मेदारी मैंने उसे सौंप दी थी। परंतु सिंहासन के सभी अधिकार पाकर उसके मन में लोभ आ गया। उसे लगने लगा कि जब तुम कुछ बड़ी हो जाओगी तो मैं उससे सारे अधिकार वापस लेकर स्वयं राज्य का कार्यभार सँभाल लूँगा। यहीं से उसकी सोच गलत दिशा की ओर मुड़ गई। वह मुझे सिंहासन से हटाकर स्वयं राजा बनने का स्वप्न देखने लगा। लेकिन मेरे रहते उसका यह स्वप्न कभी पूरा नहीं हो सकता था। अत: उसने एक भयंकर षत्रं रच डाला। एक दिन उसने समुद्र-भमण का कार्यक्रम बनाया। इसके लिए उसने मुझे भी तैयार कर लिया था। निश्चित दिन मैं और तुम जहाज पर सवार होकर समुद्र-यात्रा पर निकल पड़े। जहाज का कप्तान और कर्मचारी एंटोनियो के आदमी थे। बीच समुद्र में पहुँचकर उन्होंने हमें जबरदस्ती एक नाव में बिठाकर समुद्र में मरने के लिए छोड़ दिया। लेकिन जहाज का एक मल्लाह मेरा विश्वासपात्र था। इसलिए उसने एक दिन पहले ही नाव में खाने-पीने का सामान और मेरे सभी ग्रंथ छिपाकर रख दिए थे। लहरों के थपेड़े खाते हुए हमारी नाव अनजानी दिशा की ओर चल पड़ी। उस समय मुझे सबसे अधिक चिंता तुम्हारी थी। तुम्हें सीने से चिपटाकर मैं तेजी से नाव खे रहा था। इस प्रकार कई दिन बीत गए। धीरे-धीरे खाने-पीने का सामान समाप्त हो गया। अंतत: थकान और भूख से बेहाल होकर मैं ईश्वर को पुकारने लगा। आखिरकार उसने मेरी पुकार सुन ली और एक दिन हमारी नाव इस हरे-भरे टापू से आ टकराई। उसी दिन से हम इस टापू पर रह रहे हैं।''

अपने अतीत के बारे में सुनकर मिरांडा की आँखों से आँसू छलक आए और वह पिता के सीने से चिपट गई।

तभी प्रासपरो को एरियल का स्वर सुनाई दिया, ''स्वामी, मैं लौट आया हूँ।''

प्रासपरो बेटी के सामने एरियल से बात नहीं करना चाहता था। उसने सोचा कि उसे अदृश्य शक्ति से बात करते देखकर वह भयभीत हो जाएगी। इसलिए सर्वप्रथम उसने मंत्र पढ़कर मिरांडा को गहरी नींद में सुला दिया। फिर वह एरियल को संबोधित करते हुए बोला, ''आओ प्रेतराज! क्या समाचार लाए हो? जहाज के यात्री कैसे हैं?''

''स्वामी, आपने जैसा कहा था, मैंने वैसा ही किया। इस समय जहाज के सभी यात्री कुशल हैं। मैंने पूरी शक्ति लगाकर ऐसा भयंकर तूफान उठाया कि जहाज तिनके की तरह समुद्र में डूबने लगा। इतने भयंकर दृश्य को देखकर सभी के प्राण सूख गए। प्राण संकट में पड़े देख आपका वीर भाई सहायता के लिए चिल्लाने लगा। वह मल्लाहों के पैर पकड़कर प्राणरक्षा की प्रार्थना करने लगा। परंतु उसका पुत्र फर्डिनैंड बहुत वीर और दिलेर है। वह स्वयं एक नाव खेते हुए इस टापू की ओर आ रहा है। जहाज डूबने के बाद शेष लोग भी अलग-अलग तरीकों से टापू की ओर आ रहे हैं। परंतु आप निशिं्चत रहें, वे सभी सुरक्षित हैं।''

घटना का सारा विवरण सुनकर प्रासपरो प्रसन्न होकर बोला,''प्रेतराज, आज तुमने बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य पूरा किया है। इस उपकार के बदले में तुम्हें शीघ ही मुक्त कर दूँगा, जिससे तुम अपने सगे-संबंधियों से जाकर मिल सको। अब तुम सभी को सकुशल यहाँ ले आओ। ध्यान रहे, कोई भी यात्री मरना नहीं चाहिए। मेरे भाई एंटोनियो का विशेष तौर पर ध्यान रखना, मुझे उससे एक पुराना हिसाब चुकता करना है।''

आज्ञा पाते ही एरियल वहाँ से चला गया।

उधर, फर्डिनैंड नाव खेते हुए टापू की ओर आ रहा था। प्रासपरो की आज्ञा से एरियल ने उसके चारों ओर संगीत की मधुर स्वर-लहरियाँ बिखेर दी थीं। उसके प्रभाव से उसे थोड़ी देर पहले घटी घटना की भी कोई सुध नहीं रही। वह टापू के उस ओर तेजी से नाव खे रहा था, जिस ओर मिरांडा और प्रासपरो बैठे हुए थे।

अथक प्रयासों के बाद फर्डिनैंड की नाव टापू पर आ लगी। उसने जैसे ही टापू पर कदम रखा, मिरांडा की नजर उसपर पड़ी। अपने पिता के अतिरिक्त आज तक उसने किसी पुरुष को नहीं देखा था। इसलिए फर्डिनैंड की सौम्यता, सुंदरता और बलिष्ठ शरीर ने उसे मोहित-सा कर दिया। उसके दिल में फर्डिनैंड के लिए प्रेम का अंकुर फूट पड़ा।

इधर, मिरांडा को देखकर फर्डिनैंड भी अपनी सुधबुध खो बैठा था। एक सुनसान टापू पर उसकी मुलाकात एक अद्‌वितीय सुंदरी से होगी, इसकी कल्पना उसने कभी नहीं की थी। उसे लगा मानो वह परियों के देश में आ गया हो और सामने बैठी सुंदरी परियों की रानी है।

फर्डिनैंड की नाव जैसे ही टापू से लगी थी, वैसे ही प्रासपरो अदृश्य हो गया था। वह उनकी भाव-भंगिमाएँ देख रहा था। उन्हें एक-दूसरे में खोया देखकर उसके मन को असीम शांति मिल रही थी। उसने निश्चय कर लिया था कि वह अपनी पुत्री का विवाह इस सुंदर राजकुमार के साथ ही करेगा। परंतु वह एक बार उसकी परीक्षा लेना चाहता था। अत: वह प्रकट होकर गरजते हुए बोला, ''हे उद्‌दंड युवक! तू कौन है? इस टापू पर किसी परदेसी आदमी का आना मना है। फिर तूने यहाँ आने का साहस कैसे किया? अवश्य तू शत्रुओं का जासूस है और यहाँ की शांति भंग करने आया है। अपना परिचय दो, वरना मैं तुम्हें दंडित कर दूँगा।''

फर्डिनैंड विनम्र स्वर में बोला,''मैं मिलॉन देश के राजा एंटोनियो का पुत्र राजकुमार फर्डिनैंड हूँ। तूफान के कारण हमारा जहाज समुद्र में डूब गया है। किसी तरह मैं यहाँ तक पहुँचा हूँ। मुझे बहुत भूख लग रही है। कुछ खाने को मिलेगा?''

''तुम्हें भोजन अवश्य दिया जाएगा, राजकुमार। लेकिन इसके बदले में तुम्हें कुल्हाड़े से मेरी कुटिया के आसपास का

जंगल साफ करना होगा। यदि इस काम में तुमने जरा सी भी लापरवाही की तो तुम्हें दंडित किया जाएगा।'' प्रासपरो गरजते हुए बोला।

यह बात सुनकर फर्डिनैंड की आँखों में खून उतर आया। वह प्रासपरो को ललकारते हुए बोला,''मैं एक राजकुमार हूँ, तुम्हारा गुलाम नहीं। लगता है, तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है, इसलिए बहकी-बहकी बातें कर रहे हो। यदि तुम्हें अपनी शक्ति पर घमंड है तो आओ, मेरा मुकाबला करो।''

''मैं तो तुझे एक बालक समझ रहा था, लेकिन तेरा दुसाहस बढ़ता ही जा रहा है। ठहर, मैं अभी तुझे मजा चखाता हूँ।''

''तो फिर देर क्यों कर रहे हो? उठाओ तलवार और मुकाबला करो। ध्यान रखना, जब तक मेरे हाथ में तलवार है तब तक कोई भी मेरा अहित नहीं कर सकता।''यह कहकर राजकुमार ने तलवार की मूँठ पकड़ ली। परंतु लाख यत्न करने के बाद भी वह उसे म्यान से बाहर नहीं निकाल पाया। उसका हाथ मूँठ के साथ चिपककर रह गया।

उसकी यह हालत देखकर प्रासपरो हँसते हुए बोला, ''अभी तुम बड़ी-बड़ी बातें कर रहे थे, अचानक क्या हो गया? कहाँ गई तुम्हारी वीरता? तुमसे तो म्यान से तलवार ही नहीं निकाली जा रही, भला मेरा सामना कैसे करोगे! अगर मैं चाहूँ तो अभी तुम्हारा मस्तक काट सकता हूँ; लेकिन मैं किसी बेबस व्यक्ति पर हथियार नहीं उठाता। यदि अपना भला चाहते हो तो मेरी गुलामी स्वीकार कर लो।''

विवश राजकुमार ने सहमति में सिर हिला दिया।

फिर प्रासपरो उसकी ओर कुल्हाड़ा बढ़ाते हुए बोला,''यह लो कुल्हाड़ा और जल्दी से काम में लग जाओ। मैं शाम तक वापस लौटूँगा। तब तक एक ओर का सारा जंगल साफ हो जाना चाहिए।''

फर्डिनैंड के प्रति पिता का इतना कठोर व्यवहार मिरांडा को अच्छा नहीं लगा। वह उसका हाथ पकड़कर बोली,''पिताजी, यह राजकुमार है। इसने कभी पानी तक अपने हाथ से नहीं पिया होगा, भला इतना कठिन कार्य यह कैसे कर सकेगा? कुल्हाड़ा पकड़ने मात्र से इसके हाथ छिल जाएँगे। आप इतने कठोर और निर्दयी न बनें। इसे क्षमा कर दें।''

''चुप करो मिरांडा! एक अनजाने लड़के के लिए तुम अपने पिता को समझा रही हो। इस जैसे न जाने कितने राजकुमार दुनिया में भरे पड़े हैं। लकड़ियाँ काटने से ज्यादा-से-ज्यादा इसके हाथ छिल जाएँगे, टूटेंगे तो नहीं। इसे यह कार्य करना ही होगा। तुम भी इसका पक्ष लेने के बजाय इसके कार्य पर नजर रखो। अगर यह अपने कार्य में जरा भी लापरवाही दिखाए तो मुझे अवश्य बताना।''यह कहकर प्रासपरो वहाँ से चला गया।

लेकिन कुछ दूर जाकर वह पुन: अदृश्य हो गया और उनके पास आकर उनकी बातें सुनने लगा।

पिता की कठोरता और राजकुमार की विवशता देखकर मिरांडा की आँखें नम हो आईं। वह राजकुमार से बोली, ''पिताजी की ओर से मैं आपसे क्षमा माँगती हूँ। विश्वास कीजिए, वे इतने निर्दयी और कठोर नहीं हैं। लेकिन कभी-कभी उनका व्यवहार ऐसा हो जाता है। मुझे विश्वास है कि वे शीघ्र लौटकर आपको यह कार्य करने से रोक देंगे।''

''तुम दुखी मत हो, मिरांडा! मुझे न तो किसी से कोई शिकायत है और न ही किसी के प्रति दिल में कोई द्वेषभाव है। लेकिन यह सत्य है कि मैं तुमसे प्रेम करने लगा हूँ। मैं यहाँ से तुम्हें अपने साथ लेकर ही जाऊँगा। तुम मेरे दिल की रानी बनकर हमेशा मेरे साथ रहोगी।''राजकुमार ने प्रेम भरे स्वर में कहा।

''राजकुमार, मैं भी मन-ही-मन आपसे प्रेम करने लगी हूँ। मैंने स्वयं को तन-मन से आपको अर्पित कर दिया है। आप जहाँ रहेंगे, मैं वहाँ रहकर आपकी सेवा करूँगी।''मिरांडा ने भी अपने दिल की बात प्रकट कर दी।

अब तक प्रासपरो को उनके प्रेम पर यकीन हो चुका था। वह प्रकट होते हुआ बोला, ''और मेरा आशीर्वाद सदा तुम दोनों के साथ रहेगा। तुम जहाँ रहो, खुश रहो।''

मिरांडा और फर्डिनैंड विस्मित होकर प्रासपरो को देखने लगे। तभी एंटोनियो और उसके अन्य साथी भी एरियल के

साथ वहाँ आ पहुँचे। अभी तक एंटोनियो समझ रहा था कि तूफान उसके पुत्र को लील गया है। इस दुख के कारण उसका चेहरा मुरझाया हुआ था। लेकिन जब उसने फर्डिनैंड को एक सुंदर युवती के साथ बैठे देखा तो उसकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। उसने दौड़कर पुत्र को गले से लगा लिया।

इस मिलन के बाद एंटोनियो की दृष्टि प्रासपरो पर पड़ी। लेकिन वह उसे पहचान नहीं सका। तब प्रासपरो उसके पास आकर बोला,''आओ एंटोनियो, मुझसे भी गले मिलो। मैं कब से तुम्हें गले लगाने के लिए तरस रहा हूँ। वर्षों पहले इनसानी कमजोरियों के कारण हम एक-दूसरे से अलग हो गए थे। लेकिन ईश्वर की कृपा से आज फिर हम एक हो रहे हैं।''

आवाज सुनते ही एंटोनियो प्रासपरो को पहचान गया। अपने नीच कर्म की याद आते ही उसकी नजरें झुक गईं । वह घुटनों के बल बैठकर प्रासपरो से क्षमा माँगने लगा। प्रासपरो ने उसे उठाकर गले से लगा लिया और स्नेह भरे स्वर में बोला,''भाई, जीवन में ऐसी घटनाएँ घटती रहती हैं। लोभ कभी किसी को नहीं छोड़ता। लेकिन इनसान वही है जो दूसरों की गलतियों को दिल से क्षमा कर सके। मैंने तुम्हें उसी दिन क्षमा कर दिया था जिस दिन तुम्हारे सेवकों ने हमें समुद्र में छोड़ा था। आओ, अब सारे गिले-शिकवे भुलाकर हम इस जोड़े को अपना आशीर्वाद दें और नई जिंदगी की शुरुआत करें।''

एंटोनियो ने प्रसन्नतापूर्वक दोनों को आशीर्वाद दिया। फिर उस टापू पर खुशियों की वर्षा होने लगी।

❑

# बारहवीं रात

इल्यूशियम नगर में एक त्री ने जुड़वाँ बच्चों को जन्म दिया। रंग-रूप, शक्ल-सूरत एवं कद-काठी में दोनों समान थे। बस इतना ही अंतर था कि उनमें एक लड़का था और दूसरी लड़की। माँ ने बेटे का नाम सैबेस्टियन रखा और बेटी का व्यूला। जैसे-जैसे दोनों बच्चे बड़े होने लगे, वैसे-वैसे एक विशेष बात स्पष्ट होने लगी। प्रकृति ने दोनों बच्चों की किस्मत भी एक जैसी लिखी थी। कुदरत के ऐसे करिश्मे को देखकर सभी अचंभित थे।

धीरे-धीरे समय बीतता गया और दोनों बच्चे युवा हो गए। फिर एक दिन ऐसा भी आया जब वे दोनों जलयान पर सवार होकर विदेश यात्रा के लिए चल पड़े। लेकिन अभी वे नगर से कुछ ही दूर गए थे कि समुद्र में भयंकर तूफान आ गया। लहरों के प्रंड प्रहारों से जहाज डगमगाने लगा। नाविकों ने उसे सुरक्षित निकाल ले जाने की बहुत कोशिश की, परंतु सब व्यर्थ गया। कुछ ही पलों में वह जहाज एक विशाल चट्टान से टकराकर टुकड़े-टुकड़े हो गया।

इस दुर्घटना में कई यात्री समुद्र की लहरों में समाकर काल के ग्रास बन गए; अनेक लोग तैरते हुए इधर-उधर बह गए। परंतु विधाता ने भाई-बहन दोनों का जीवन सुनहरी कलम से लिखा था। उनका जीवन अभी शेष था। वे इस दुर्घटना में सुरक्षित बच गए, लेकिन एक-दूसरे से बिछड़ गए। पानी में डूबता-तैरता सैबेस्टियन लकड़ी के एक तख्ते तक जा पहुँचा। वह तख्ता उसके जीवित रहने का एकमात्र साधन था। अत: उसने उसे मजबूती से पकड़ लिया। लहरों के थपेड़े खाता वह तख्ता पानी पर तैरने लगा।

स्वयं को सुरक्षित पाकर उसे अपनी बहन व्यूला की याद आई। उसने बेचैन होकर इधर-उधर देखा। तभी उसे एक नाव दिखाई दी, जिस पर कुछ मल्लाह सवार थे। वे एक लड़की को जल से नाव पर खींच रहे थे। वह लड़की व्यूला ही थी। उसने आवाज लगाने की बहुत कोशिश की, लेकिन नाव के दूर होने तथा लहरों के शोर के कारण उसकी आवाज दबकर रह गई। फिर भी उसे बहुत संतोष था। उसकी बहन सुरक्षित बच गई थी।

'यदि जीवन रहा तो वह उससे पुन: मिल लेगा', यह सोचकर उसके मन में एक नई शक्ति का संचार हुआ और वह तख्ते को किनारे की ओर खेने लगा।

इधर व्यूला ने भी भाई को सुरक्षित देख लिया था। उसके मन में भी भाई से पुन: मिलने की आशा जाग उठी। इस प्रकार तूफान ने दोनों भाई-बहन को एक-दूसरे से अलग कर दिया।

बचे हुए यात्रियों को लेकर नाव किनारे पर पहुँची और सभी ईश्वर का धन्यवाद करते हुए एक-एक कर उतरने लगे। लेकिन व्यूला जहाज के कप्तान के पास गई और धीरे से बोली—"श्रीमान, मेरा भाई मेरी जिंदगी का एकमात्र सहारा था। परंतु तूफान ने उसे मुझसे छीन लिया। न जाने वह कहाँ और किस हाल में होगा? मैं ईश्वर से सिर्फ इतनी प्रार्थना कर सकती हूँ कि वह जहाँ भी रहे, खुश और स्वस्थ रहे। मुझे पूरी उम्मीद है कि एक-न-एक दिन मैं उससे जरूर मिलूँगी। परंतु वह दिन कब आएगा, मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानती। कप्तान साहब, क्या आप बता सकते हैं कि मुसीबत की इस घड़ी में मैं कहाँ जाऊँ और किसके पास रहूँ?"

कप्तान दोनों भाई-बहन को पहले ही दिन से पिता के समान चाहने लगा था। उसने व्यूला के सिर पर हाथ फेरा और प्रेम भरे स्वर में बोला, "बेटी, मैं जहाज का कप्तान हूँ। मेरा कोई ठिकाना नहीं है। आज यहाँ तो कल वहाँ। मेरी सारी जिंदगी इसी प्रकार सफर में निकल गई है। इसलिए चाहकर भी मैं तुम्हें अपने पास नहीं रख सकता। लेकिन तुम पास के द्वीप पर चली जाओ। वहाँ ओर्सिनो नामक बड़ा ही धर्मात्मा और दयालु राजकुमार रहता है। वह युवा है, फिर भी अभी तक उसने विवाह नहीं किया है।"

‘‘क्या मैं जान सकती हूँ कि उसने विवाह क्यों नहीं किया?’’व्यूला ने पूछा।

‘‘वह राजकुमार ओलिविया नामक एक युवती से प्रेम करता है। वह भी उससे बहुत प्रेम करती थी। ओलिविया का एक छोटा भाई था। वह उसे अपने प्राणों से अधिक प्रेम करती थी। लेकिन छह महीने पूर्व उसका भाई रोगी होकर काल का ग्रास बन गया। भाई की मृत्यु ने उसके मन पर ऐसा गहरा आघात किया कि उसने स्वयं को एक कमरे में बंद कर लिया। तभी से वह सभी सुख त्यागकर उस कमरे में बंद रहती है। वह कभी भी अपने दिल से भाई की याद को निकाल नहीं सकी। यही कारण है कि वह न तो किसी से मिलती-जुलती है और न ही स्वयं पर किसी परपुरुष की छाया पड़ने देती है। इसी के चलते उसने स्वयं को राजकुमार से भी दूर कर लिया। इधर राजकुमार दिन-रात उसके लिए तड़पता रहता है।’’

व्यूला दुखी स्वर में बोली, ‘‘न जाने मुझे भी मेरा भाई मिलेगा या नहीं। उसके बिना जीवित रहना बहुत कठिन है। कप्तान साहब, आपने जिस ओलिविया के बारे में बताया है, मैं भी उसकी तरह भाई के बिछोह से दुखी हूँ। यदि आप मुझे उस तक पहुँचा दें तो मैं आपका उपकार कभी नहीं भूलूँगी। मुझे पूरा विश्वास है कि अपने भाई की मृत्यु के दुख में डूबी ओलिविया मेरे मन की पीड़ा को अवश्य समझेगी और सैबेस्टियन को ढूँढ़ने में मेरी पूरी सहायता करेगी।’’

कुछ देर सोचने के बाद कप्तान बोला, ‘‘बेटी, शायद तुम ठीक कह रही हो। लेकिन उससे मिलना इतना सरल नहीं है। बिना परिचय के वह किसी से नहीं मिलती। उचित यही होगा कि तुम राजकुमार के पास जाओ। वह तुम्हारी कोई-न-कोई सहायता अवश्य करेगा और तुम्हें तुम्हारा भाई मिल जाएगा।’’

व्यूला को यह परामर्श उचित लगा। उसने कप्तान से विदा ली और राजकुमार से मिलने चल पड़ी।

कुछ दिनों की यात्रा के बाद वह द्वीप पर जा पहुँची। उसने एक देहाती युवक का वेश बनाया और राजकुमार के पास नौकरी करने लगी। सभी उसे सिसेरियो के नाम से जानते थे। जुड़वाँ होने के कारण वह बिलकुल अपने भाई जैसी दिखाई देती थी। ऊपर से पुरुष वेश ने उसे पूरी तरह से सैबेस्टियन की तरह बना दिया था।

चूँकि वह प्रत्येक कार्य में निपुण थी, इसलिए शीघ्र ही उसने अपने सेवाभाव से राजकुमार का मन जीत लिया। धीरे-धीरे वह राजकुमार की इतनी विश्वासपात्र बन गई कि वह उसे अपने दिल की सारी बातें बताने लगा। उसने उसे अपने प्रेम-संबंधों के बारे में भी विस्तार से बताया और उससे सहायता करने के लिए कहा।

परंतु अब तक व्यूला स्वयं भी राजकुमार से प्रेम करने लगी थी। राजकुमार का सुंदर, सलोना और सौम्य चेहरा बार-बार उसे आकर्षित करता था। वह मोहित होकर उसकी ओर खिंची चली जाती थी। वह मन-ही-मन सोचा करती थी कि ओलिविया कितनी पत्थरदिल है, जिसने इतने सुंदर राजकुमार को रोने के लिए छोड़ दिया है। उसके मन पर इसकी आहों का कोई असर नहीं होता। यदि राजकुमार मुझे मिल जाएँ तो मैं इन्हें पलकों पर बिठाकर रखूँगी, इनके चरणों को माथे से लगाऊँगी।

एक दिन ओलिविया को याद करते हुए ओर्सियो आँसू बहा रहा था। सिसेरियो से यह देखा न गया। वह उसके पास आया और स्नेह भरे स्वर में बोला, ‘‘राजकुमार, आप दिन-रात ओलिविया का गुणगान करते हुए आँसू बहाते रहते हैं। इसके चलते न तो आपको खाने-पीने की सुध रहती है और न ही किसी और काम में आपका मन लगता है। मुझसे आपकी यह दशा नहीं देखी जाती। आखिर यों कब तक आप उसे याद करके स्वयं को दुख पहुँचाते रहेंगे? आप तो उसके नाम की माला जपते रहते हैं, लेकिन क्या उसने कभी आपकी फिक्र की है? मुझे लगता है कि उस पत्थर दिल पर आपकी प्रार्थनाओं का कोई असर नहीं होगा।’’

राजकुमार तड़पते हुए बोला, ‘‘सिसेरियो, शायद ईश्वर ने त्रियों का मन ही पत्थर का बनाया है। इसलिए उनका दिल दुख भरी आहों से भी नहीं पसीजता। एक ओर तो पुरुष अपना सबकुछ त्री पर न्योछावर करके भी स्वयं को ऋणी मानते

हैं, वहीं दूसरी ओर पत्थरदिल नारी को उनकी भावनाओं और जज्बातों से कोई सरोकार नहीं होता।''

राजकुमार के मुँह से त्रियों के लिए कठोर वचन सुनकर सिसेरियो का दिल तड़प उठा। उसने पुरुष का वेश बना रखा था, लेकिन वास्तव में वह थी तो एक नारी ही। वह राजकुमार को बताना चाहती थी कि हर नारी का दिल पत्थर का नहीं होता। उसके दिल में उसके लिए कितनी कोमल और स्नेहयुक्त भावनाएँ हैं। लेकिन चाहकर भी वह ये सब बातें उसे नहीं बता सकती थी। काश, वह विवश न होती तो अपना दिल निकालकर दिखा देती कि वह उसे कितना प्रेम करती है।

राजकुमार पुन: बोला, ''इस दुनिया में त्री के प्यार पर विश्वास करना सबसे बड़ी मूर्खता है। उसका प्यार चंचल हिरणी की तरह होता है, जो कभी भी किसी एक स्थान पर नहीं टिकती।''

इस बार सिसेरियो अपने आप को नहीं रोक पाया। आखिरकार उसके मन की बात जुबान पर आ ही गई। वह थरथराते होंठों से बोला,''राजकुमार, इस प्रकार नारी के प्यार का अपमान न करें। आप नहीं जानते, नारी का प्यार कितना महान् होता है। यदि मैं त्री होता तो बता देता कि नारी का प्यार आसमान से भी ऊँचा और अनंत होता है। उसके सामने संसार के सभी सुख छोटे प्रतीत होते हैं। मुझे इसका बहुत गहरा अनुभव है।''

राजकुमार आश्चर्य में भरकर बोला, ''यह क्या कह रहे हो तुम, सिसेरियो? क्या तुम अपनी बात का प्रमाण दे सकते हो?''

''उचित समय की प्रतीक्षा करें, राजकुमार! एक दिन मैं इस बात को प्रमाण सहित सिद्ध कर दूँगा।''सिसेरियो ने आत्मविश्वास के साथ कहा।

''सिसेरियो, मेरे लिए ओलिविया ही प्रत्यक्ष प्रमाण है। यदि तुम उसके मन में मेरे लिए पुन: प्रेम उत्पन्न कर दो तो मैं तुम्हारी बात मान लूँगा। मुझे तुम्हारे अंदर वह शक्ति दिखाई दे रही है जिससे तुम ओलिविया को मोहकर मेरे पास ला सकते हो। मित्र, तुम उसके पास मेरे प्रेम का संदेश लेकर जाओ और उसे मेरी वास्तविक स्थिति से अवगत कराओ। मुझे पूरा विश्वास है कि उसका पत्थरदिल अवश्य पिघल जाएगा। यदि तुमने ऐसा कर दिया तो मैं तुम्हारा अहसान जिंदगी भर नहीं भूलूँगा।''राजकुमार ने उसके हाथ पकड़कर विनती की।

व्यूला के मन पर जैसे किसी ने तलवार से वार किया हो। इस आघात ने उसके चेहरे को पीड़ा से भर दिया। जिसे वह दिलोजान से प्यार करती है, उसका प्रेम-संदेश दूसरी युवती के पास ले जाने की कल्पना तक से उसका दिल टुकड़े-टुकड़े हो गया। अपने प्रेमी को दूसरे के हाथ सौंपने की बात उसे अंदर-ही-अंदर बुरी तरह से कचोटने लगी। कितनी विकट स्थिति उत्पन्न हो गई थी। न चाहते हुए भी इस कार्य के लिए उसे ही चुना गया था।

परंतु वह राजकुमार को दिल से चाहती थी; उसके लिए उसकी खुशी ही सबसे अधिक महत्त्व रखती थी। सच्चा प्यार भी वही होता है, जिसमें आप अपने प्यार की अधिक परवाह करते हैं। इसलिए सीने पर पत्थर रखकर वह ओलिविया के पास जा पहुँची और राजकुमार की व्यथा बताते हुए बोली, ''राजकुमारी, वे आपके बिना पल-पल मर रहे हैं। उनकी आँखें हमेशा आँसुओं से भीगी रहती हैं। उन्हें न तो खाने-पीने का होश रहता है, न ही सोने-जागने का। वे आपसे बहुत प्यार करते हैं। यदि आप उन्हें नहीं मिलीं तो वे ऐसे ही घुट-घुटकर अपने प्राण त्याग देंगे। इसलिए आप उन्हें स्वीकार करके उनकी प्राणरक्षा करें। इसी में आपकी और उनकी भलाई है।''

ओलिविया के मन में प्यार का सागर उमड़ आया। किंतु यह राजकुमार के लिए नहीं था। सिसेरियो की प्रेमयुक्त बातों, कोमल आवाज और सौम्य चेहरे ने उसे मोहित-सा कर दिया। चूँकि सिसेरियो पुरुष वेश में था, इसलिए वह उसे पुरुष समझकर मन-ही-मन उससे प्रेम करने लगी। उस पर सिसेरियो का जादू ऐसा चला कि वह भाई के दुख को भी भूल बैठी। उसने सिसेरियो का हाथ पकड़ लिया और प्रेमपूर्वक उसे चूमने लगी।

सिसेरियो ओलिविया के मन के भावों को समझ गया। उसने हाथ पीछे खींच लिया और पुन: उसका मन राजकुमार

की ओर मोड़ने का प्रयत्न करने लगा।

पानी की धारा का मुख तो मोड़ा जा सकता है, किंतु समुद्र का रास्ता मोड़ना असंभव होता है। ऐसा ही कुछ ओलिविया के साथ भी हुआ। सिसेरियो उसे जितना राजकुमार के बारे में बताता, उतना ही वह उसकी ओर आकर्षित होती जाती। अंत में वह विनम्र स्वर में बोली,''युवक, तुम मेरी ओर से राजकुमार से क्षमा माँग लेना और उन्हें कह देना कि वे मेरे लिए इतने दीवाने न हों। मैं उनके योग्य नहीं हूँ। इसलिए वे मुझे भूल जाएँ। मैं कभी उनकी नहीं हो सकती।''

आखिरकार सिसेरियो उसे समझा-समझाकर हार गया और निराश होकर राजकुमार के पास लौट आया।

सिसेरियो के बाद ओलिविया का मन बेचैन हो गया। ऐसा लगने लगा मानो कोई उसका मन निकालकर ले गया हो। बार-बार उसकी आँखों के सामने सिसेरियो का चेहरा घूमने लगा। कानों में उसी की मधुर आवाज गूँजने लगी। वह उससे पुन: मिलना चाहती थी। लेकिन उसे कोई रास्ता नजर नहीं आया। इसी प्रकार सारी रात कट गई।

*सुबह कुछ सोचकर उसने कागज-कलम उठाई और सिसेरियो के नाम एक पत्र लिखने लगी—*

*'प्रिय सिसेरियो,*

*मैं अपने आप में डूबी हुई चुपचाप दिन काट रही थी। मुझे किसी से कोई मतलब नहीं था। लेकिन कल तुम बारिश की बूँदों की तरह आए और मुझे अपने प्रेम से पूरी तरह भिगो दिया। तुम्हारी बातों ने मेरे मन में विचारों की उथल-पुथल पैदा कर दी। राजकुमार का संदेश लेकर तुम मेरे पास क्यों आए थे? तुम तो चले गए, साथ में मेरा सुख-चैन और मन चुराकर ले गए। तुम्हारे साथ बीता हुआ एक-एक पल मुझे याद आ रहा है। तुमसे मिलने के बाद मैं तुम्हारी हो गई हूँ। प्रियतम! अगर तुम्हारे दिल में मेरे लिए जरा सी भी दया है तो एक बार आकर मेरी आँखों को तृप्त अवश्य करो। मैं पलकें बिछाए बड़ी बेसब्री से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हूँ।*

*तुम्हारी ओलिविया'*

पत्र लिखने के बाद उसने अपने एक विश्वस्त सेवक के हाथों वह संदेश सिसेरियो तक पहुँचा दिया।

पत्र पढ़कर एक पल के लिए सिसेरियो भौचक्का रह गया। फिर जोरदार ठहाका लगाकर हँसने लगा। उसके मन में ओलिविया के लिए सहानुभूति उमड़ आई। उसकी कोमल भावनाओं पर उसे दया आने लगी। यह वही ओलिविया थी, जो पुरुष के साए से भी दूर रहती थी। परंतु आज एक त्री के प्रेम में पड़कर सुधबुध खो बैठी थी।

लेकिन यह मजाक का विषय नहीं था। इससे स्थिति और भी गंभीर हो सकती थी। यही सोचकर व्यूला पुन: ओलिविया के पास गई और समझा-बुझाकर उसका मन अपनी ओर से हटाने का प्रयत्न करने लगी। लेकिन अनेक प्रयत्न करने के बाद भी वह उसकी दीवानगी दूर नहीं कर सकी। अंत में थक-हारकर वह महल की ओर लौट पड़ी।

जैसे ही व्यूला ओलिविया के घर से बाहर निकली, उसका सामना एक शराबी से हो गया। नशे के कारण वह बुरी तरह से लड़खड़ा रहा था। उसने व्यूला का मार्ग रोक लिया और उत्तेजित होते हुए बोला, ''अच्छा, तो तुम ही वह व्यक्ति हो जिसके हाथ राजकुमार अपने प्रेम संदेश ओलिविया तक पहुँचाता है। मैं ओलिविया से प्रेम करता हूँ;+ वह सिर्फ मेरी है। उसे कोई मुझसे नहीं छीन सकता। अगर राजकुमार सोचता है कि वह तुम्हें भेजकर ओलिविया के मन में अपने लिए प्रेम पैदा कर लेगा तो यह उसकी भूल है। मैं अभी तुम्हें इसका मजा चखाता हूँ। इसके बाद मैं उस राजकुमार को सबक सिखाऊँगा।''

यह कहकर शराबी ने तलवार निकाल ली और सिसेरिया की ओर लपका।

उसे अपनी ओर आते देख सिसेरिया के होश उड़ गए। आखिरकार थी तो वह एक लड़की ही। वह भला उस शराबी का सामना कैसे कर पाती! भय से उसका चेहरा पीला पड़ गया। वह पसीने से नहा उठी।

वह सहायता के लिए चिल्लाना ही चाहती थी कि तभी उसे एक पुरुष स्वर सुनाई दिया, ''घबराओ मत सैबेस्टियन! मैं अभी इस दुष्ट को सीधा करता हूँ।''

अपने भाई का नाम सुनकर व्यूला चौंक पड़ी। उसने पलटकर देखा तो गली के कोने से एक व्यक्ति तेज-तेज चलता हुआ आ रहा था। वह व्यूला के लिए अजनबी था। पास आते ही उस अजनबी ने शराबी का हाथ पकड़ लिया और उसके साथ भिड़ गया। पलक झपकते ही उसने शराबी की तलवार छीन ली और उसे लात-घूँसों से मारने लगा।

अचानक घटी इस घटना ने व्यूला को बेसुध-सा कर दिया। इससे पहले कि वह कुछ कर पाती, दो सैनिकों ने आकर अजनबी के हाथों में हथकड़ी पहना दी और उसे घसीटकर थाने ले जाने लगे।

अजनबी चीखते हुए बोला, ''देख क्या रहे हो, सैबेस्टियन! मेरी मदद करो।'

व्यूला को जैसे कुछ सुनाई दे रहा था; वह एकटक उस अजनबी को देख रही थी।

अजनबी ने उसे पुन: पुकारा, ''सैबेस्टियन, इस प्रकार बुत बनकर क्यों खड़े हो? मेरी मदद करो। भूल गए, मैंने तुम्हें समुद्र में से निकालकर तुम्हारी रक्षा की थी। इस समय भी मैं तुम्हारी प्राणरक्षा के लिए ही इस शराबी से उलझा था। लेकिन मेरी मदद करने के बदले तुम चुप खड़े हो।''

अजनबी की बात सुनकर व्यूला जैसे नींद से जागी। उसकी चेतना लौटने लगी। धीरे-धीरे उसके मस्तिष्क में सारी स्थिति स्पष्ट होने लगी। वह समझ गई कि यह अजनबी अवश्य उसके भाई का मित्र है। इसका मतलब यह था कि उसका भाई अभी जीवित है। यह सोचकर उसका मन प्रसन्नता से भर उठा। लेकिन इससे पूर्व वह सैनिकों को कुछ कह पाती, वे उसे घसीटते हुए वहाँ से ले गए।

व्यूला ने इधर-उधर देखा, तब तक शराबी भी वहाँ से नौ-दो ग्यारह हो चुका था। कहीं वह न लौट आए, यह सोचकर व्यूला तेजी से आगे बढ़ गई।

जैसे ही व्यूला गली से बाहर निकली वैसे ही दूसरे छोर से सैबेस्टियन ने गली में प्रवेश किया। अभी वह गली के बीचोबीच पहुँचा ही था कि शराबी पुन: लौट आया। इस बार उसके साथ दो हट्टे-कट्टे गुंडे भी थे।

उसने सैबेस्टियन को व्यूला समझकर घेर लिया और उसे झिड़कते हुए बोला, ''तूने मुझे अपने साथी के हाथों पिटवाकर बहुत बुरा किया। मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा। देख, मैं तेरी कैसी दुर्गति करता हूँ।'' यह कहकर तीनों गुंडों ने तलवारें निकाल लीं और सैबेस्टियन पर हमला कर दिया।

लेकिन सैबेस्टियन भी एक उत्कृष्ट कोटि का तलवारबाज और बड़ा ही चुस्त लड़ाका था। वह उनके वार बचा गया और तेजी से अपनी तलवार निकालकर उनका सामना करने लगा। देखते-ही-देखते उसने तीनों की तलवारें काट डालीं और मार-मारकर उन्हें भागने के लिए विवश कर दिया।

तब तक शोर-शराबा सुनकर ओलिविया भी बाहर आ गई थी। सैबेस्टियन को अकेले तीनों गुंडों को धूल चटाते देख वह बुरी तरह से उस पर आसक्त हो गई। वह उसे सिसेरियो समझ रही थी। उसने उसका हाथ पकड़ा और उसे प्रेमपूर्वक अपने महल के अंदर ले आई।

सैबेस्टियन बड़ा हैरान था। इस शहर में नया होने के कारण वह न तो किसी को जानता था और न ही पहले कभी यहाँ आया था। फिर भी बिना किसी कारण के वे गुंडे उससे लड़ने को उतावले हो रहे थे। इसके बाद एक अनजानी राजकुमारी उस पर स्नेह और प्रेम की वर्षा कर रही थी। इन सबने उसे सोच में डाल दिया। वह इसे जितना सुलझाने की कोशिश करता, उतना ही और उलझता जाता।

धीरे-धीरे ओलिविया के प्रेम ने सैबेस्टियन पर अपना असर दिखाना शुरू कर दिया। वह सोचने लगा कि शायद मेरी वीरता और सुंदरता देखकर यह युवती मुझसे प्रेम करने लगी है। उसका मन भी ओलिविया की ओर आकर्षित हो रहा

था। अत: वह भी उसके प्रेम का प्रत्युत्तर प्रेम से देने लगा।

ओलिविया भी उसका व्यवहार देखकर आश्चर्यचकित हो रही थी। कुछ देर पहले तक सिसेरियो उससे दूर रहने की बात कर रहा था। लेकिन अब उसके प्रति प्रेम प्रदर्शित कर रहा था। उसमें यह परिवर्तन देखकर ओलिविया बहुत प्रसन्न हुई। अंतत: सिसेरियो भी उसे प्रेम करने लगा था। उसकी मन की मुराद पूरी हो गई थी।

उधर थाने में सैनिक उस अजनबी से पूछताछ कर रहे थे।

''तुम्हारा नाम क्या है? क्या करते हो?''

''मेरा नाम एंटोनियो है। मैं एक जहाज का कप्तान हूँ।''उसने शालीनता से उत्तर दिया।

''तुम उस शराबी के साथ लड़ाई क्यों कर रहे थे?''

''वह मेरे मित्र सैबेस्टियन को मारने वाला था। उसे बचाने के लिए ही मैंने उस शराबी से लड़ाई की थी।''

''अगर वह तुम्हारा मित्र था तो तुम्हारे पुकारने पर वह कुछ बोला क्यों नहीं?''सिपाही ने अगला प्रश्न किया।

एंटोनियो का चेहरा गुस्से से लाल हो गया। वह भभकते हुए बोला, ''जब वह समुद्र में डूब रहा था, तब मैंने उसके प्राण बचाए, उसे अपने जहाज पर शरण दी, उसकी सुख-सुविधाओं का ध्यान रखा। आज भी उसे बचाने के लिए मैंने अपने प्राण संकट में डाले थे। लेकिन मुझे नहीं पता था कि वह मक्कार और कृतघ्न है।''

''अब तुम क्या करोगे?''

''मैं इस शहर में परदेशी हूँ। मेरा इरादा किसी को नुकसान पहुँचाने का नहीं था। मैंने जो कुछ किया, बचाव में किया। अब आप पर निर्भर करता है कि इसके लिए मुझे दंडित करें या छोड़ दें।''एंटेनियो ने शांत स्वर में कहा।

उसकी विनम्रता देखकर सैनिक बड़े प्रभावित हुए और उसे चेतावनी देकर छोड़ दिया।

सैबेस्टियन की दगाबाजी ने एंटोनियो के तन-बदन में आग लगा दी थी। वह उससे प्रतिशोध लेने के लिए तड़प रहा था। उसने निश्चय कर लिया था कि चाहे कुछ भी हो जाए, वह उसे सबक सिखाकर रहेगा। वह शीघता से उस स्थान पर जा पहुँचा, जहाँ से उसे बंदी बनाया गया था। लेकिन सैबेस्टियन का दूर-दूर तक कोई पता नहीं था।

उधर, सिसेरियो अभी तक महल में नहीं पहुँचा था। राजकुमार को उसकी चिंता होने लगी। जब बहुत देर हो गई तो उसे ढूँढ़ते हुए वह ओलिविया के घर पहुँचा। घर के अंदर प्रवेश करते ही उसकी आँखें फटी-की-फटी रह गईं । उसने देखा, सिसेरियो पलंग पर शॉल लपेटे बैठा हुआ है। पास ही ओलिविया बैठी हुई उसे अपने हाथों से फल खिला रही थी।

यह दृश्य देखकर राजकुमार का रोम-रोम जल उठा। उसने स्वप्न में भी ऐसी कल्पना नहीं की थी। वह गरजते हुए बोला, ''सिसेरियो! विश्वासघाती! मैंने तुझे अपना राजदार बनाकर ओलिविया के पास भेजा था, ताकि तू उसके दिल में मेरे लिए प्रेम पैदा कर सके। लेकिन तू अपनी ही दाल गलाने लगा। ऐसा करते हुए तुझे लज्जा नहीं आई! तू भूख से तड़पते हुए मेरे पास आया था। मैंने तुझे खाना दिया, नौकरी दी, यहाँ तक कि तुझे मित्र की तरह समझा। परंतु तूने मेरी पीठ में ही छुरा घोंप दिया!''

राजकुमार की जली-कटी सुनकर सैबेस्टियन भी गुस्से में भर आया और पलंग से खड़े होते हुए बोला, ''कौन है तू, जो इस तरह से मुझे अपशब्द बोल रहा है? किसने कहा कि मैं तेरे पास भूख से पीड़ित होकर आया था? लगता है, तेरा दिमाग फिर गया है, इसलिए मुझे सिसेरियो के नाम से पुकार रहा है। कान खोलकर सुन ले, मेरा नाम सैबेस्टियन है और मैं आज ही इस शहर में आया हूँ। अगर अब तूने कुछ गलत बोला तो मैं तेरी जुबान खींच लूँगा!''

सैबेस्टियन का स्वर इतना ऊँचा था कि बाहर खड़े एंटोनियो ने भी उसकी आवाज सुन ली। वह शीघता से घर के अंदर आया और सैबेस्टियन से बोला—''दुष्ट, मैंने तुझे अपना मित्र समझा और तूने मेरे साथ ही विश्वासघात किया! मैंने तुझे डूबने से बचाया था। यहाँ भी तुझे बचाने के लिए मैंने अपने प्राण संकट में डाले। लेकिन तू मक्कार और

दगाबाज निकला। तुझ जैसे धोखेबाज को तो भूखे कुत्तों के सामने डाल देना चाहिए।''

यह कहकर उसने सैबेस्टियन को पकड़ लिया और बाहर घसीटने लगा। इस कार्य में राजकुमार भी उसकी सहायता करने लगा। तभी आश्चर्य से दोनों की आँखें खुली-की-खुली रह गईं। उन्होंने सैबेस्टियन को छोड़ दिया और दरवाजे की ओर देखने लगे। वहाँ से व्यूला अंदर आ रही थी। उस समय भी वह पुरुष-वेश में ही थी।

एक समान कद-काठी, रंग-रूप एवं चेहरेवाले दो व्यक्तियों को देख राजकुमार और एंटोनियो बार-बार पलकें झपकने लगे। दोनों में बाल भर भी अंतर नहीं था। ओलिविया भी दुविधा में पड़ गई कि इसमें से उसका प्रेमी कौन है।

उनके रहस्य को कोई नहीं जानता था। परंतु सैबेस्टियन और व्यूला एक-दूसरे को पहचान गए। प्रसन्नता से उनकी आँखें भर आईं और उन्होंने आगे बढ़कर एक-दूसरे को गले से लगा लिया। आस-पास खड़े लोग बड़े आश्चर्य के साथ उनके इस भावुक मिलन को देख रहे थे।

व्यूला भाई को जोर से बाँहों में भरते हुए बोली, ''आप कहाँ चले गए थे, भैया? आपके बिना मैंने एक-एक पल पहाड़ की तरह काटा है। आज आपको जीवित देखकर मेरे सभी दुख और कष्ट समाप्त हो गए हैं।''

''मेरी बहन! तुम्हारे बिना मेरा हाल भी बहुत बुरा था। हर पल मुझे तुम्हारी याद आती रहती थी। तुम्हें देखकर मुझमें फिर से प्राणों का संचार हो गया है।''सैबेस्टियन ने बहन की आँखों से आँसू पोंछते हुए कहा।

अब तक शांत खड़ा राजकुमार सैबेस्टियन के मुख से सिसेरियो के लिए 'बहन' शब्द सुनकर बुरी तरह से चौंक पड़ा। वह धीमे से बोला, ''तो क्या सिसेरियो पुरुष वेश में एक लड़की है? लेकिन इसने ऐसा क्यों किया?''

''राजकुमार, यह मेरा भाई सैबेस्टियन है। जहाज-दुर्घटना में हम एक-दूसरे से बिछड़ गए थे। जिस व्यक्ति ने मुझे डूबने से बचाया था, उसने मुझे बताया कि सैबेस्टियन को ढूँढ़ने में केवल आप ही मेरी सहायता कर सकते थे। इसलिए पुरुष वेश बनाकर मैं आपके पास सहायता के लिए आई थी। परंतु यहाँ आकर आपकी सौम्यता, दयालुता और शालीनता ने मेरे मन को जीत लिया और मन-ही-मन मैं आपसे प्रेम कर बैठी। यह आप पर निर्भर करता है कि आप मुझे स्वीकार करें या नहीं, लेकिन मैं जीवन भर आपकी सेवा करती रहूँगी।''आखिरकार व्यूला ने अपने मन की बात कह ही दी।

व्यूला के प्रेम को लेकर राजकुमार के मन में कोई संदेह नहीं था। उसने आगे बढ़कर उसे मन से लगा लिया।

अब सैबेस्टियन की बारी थी। वह ओलिविया से बोला, ''जब मैं डूब रहा था तब एंटोनियो ने मुझे बचाया था। मैं इसका उपकार जिंदगी भर नहीं भूल सकता। हम दोनों व्यूला को ढूँढ़ने के लिए ही इस शहर में आए थे। परंतु संयोगवश मेरी भेंट ओलिविया से हो गई। ओलिविया, मैं तुमसे प्यार करने लग गया हूँ। क्या तुम मेरे साथ जीवन बिताना पसंद करोगी?''

ओलिविया ने सैबेस्टियन का हाथ थामकर अपनी स्वीकृति दे दी। अब तक एंटोनियो भी सारी बात समझ चुका था। उसने सैबेस्टियन से अपने किए की माफी माँग ली। इसके बाद राजकुमार व्यूला को लेकर वहाँ से चला गया।

❑

# हैमलेट

डेनमार्क से कुछ दूरी पर एक खूबसूरत देश था। वहाँ हैमलेट नाम का राजा राज्य करता था। उसका विवाह एक अत्यंत सुंदर राजकुमारी के साथ हुआ। दोनों एक-दूसरे को बहुत प्रेम करते थे तथा एक-दूसरे के लिए हमेशा प्राण तक न्योछावर करने के लिए तैयार रहते थे। विवाह के बाद रानी ने एक पुत्र को जन्म दिया। उसका नाम कुमार हैमलेट रखा गया। बचपन से ही वह माता की अपेक्षा अपने पिता से अधिक प्रेम करता था। महाराज हैमलेट का क्लेदियस नामक एक छोटा भाई भी था। वह उन्हीं के साथ रहता था। इस प्रकार वे सुखपूर्वक जीवन बिता रहे थे। हैमलेट के राज्य में सुख-समृद्धि का वास था। उसने लोगों की भलाई के लिए अनेक कार्य किए। यही कारण था कि प्रजा ऐसा राजा पाकर स्वयं को धन्य समझती थी।

एक दिन भयंकर दुर्घटना घटी; राजा हैमलेट स्वर्ग सिधार गए। उनकी मृत्यु के बारे में क्लेदियस के अतिरिक्त कोई नहीं जानता था। आँखों में आँसू भरकर उसने भारी मन से घोषणा की कि एक जहरीले सर्प के काटने से महाराज हैमलेट काल का ग्रास बन गए हैं।

हैमलेट की मृत्यु का समाचार प्रजा पर कड़कती बिजली बनकर गिरा। प्रजा अपने राजा हैमलेट को बहुत प्रेम करती थी। इस समाचार ने उन्हें दुख के गहरे सागर में डुबो दिया। सारे राज्य में शोक की लहर दौड़ गई।

इस दुर्घटना का सबसे बुरा असर राजकुमार हैमलेट पर पड़ा। वह अपने पिता से बहुत स्नेह करता था। उसका अधिकांश समय उन्हीं के साथ व्यतीत होता था। उसका नन्हा दिल पिता की मृत्यु से बिलकुल टूट गया। उसकी आँखों से निरंतर आँसू बहते रहते। उसकी भूख-प्यास और नींद समाप्त हो गई थी। किसी तरह समझा-बुझाकर उसे सुलाया जाता। परंतु आधी रात के समय पिता को पुकारते हुए वह बिस्तर से उठ बैठता। उसके बाद सारी रात करवटें बदलते या रोते हुए गुजार देता था।

इसी प्रकार दो महीने बीत गए। लेकिन अब भी उसके दिलो-दिमाग पर पिता की छाप ताजा थी। एक पल के लिए भी वह पिता को नहीं भूला था। वह उनके कक्ष में जाकर घंटों रोया करता था।

अभी वह स्वयं को सँभाल भी नहीं पाया था कि एक दिन एक समाचार सुनकर वह आश्चर्यचकित रह गया। उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। जिस माँ ने जीवित रहते उसके पिता को अथाह प्यार दिया था, जो उनके लिए अपना सबकुछ न्योछावर करने को तत्पर रहती थी, उसी ने उसके चाचा क्लेदियस के साथ विवाह कर लिया था। इस बारे में उसने उसे भी कुछ बताना उचित नहीं समझा था। सारा कार्य बड़े गुप्त ढंग से संपन्न हुआ था।

यह विवाह किसी भी प्रकार से उपयुक्त नहीं कहा जा सकता था। जहाँ रानी सुंदरता की मूर्ति थी, वहीं क्लेदियस बहुत काला, भद्दा और असामान्य कठ-काँठी का व्यक्ति था। ढूँढ़ने पर भी उसमें कोई गुण नजर नहीं आता था। स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो वह किसी भी तरह से रानी और राजसिंहासन के योग्य नहीं था। परंतु यह बात केवल हैमलेट समझता था, रानी ने तो इस ओर से अपनी आँखें मूँद रखी थीं।

रानी ने इस विवाह के लिए बहुत जल्दी अपनी स्वीकृति दे दी थी, यही बात हैमलेट को सबसे अधिक चुभती थी। उसके पिता को गुजरे अभी दो महीने ही हुए थे और उसकी माँ ने दूसरा विवाह कर लिया था। पति के लिए उसकी माँ के मन में जो प्रेम था, जो समर्पण भाव था, वह इतनी जल्दी कहाँ लुप्त हो गया—इस बात ने हैमलेट को चिंता में डाल दिया।

एक दिन हैमलेट अपने कक्ष में बैठा पिछले कुछ महीनों में घटित घटनाओं के बारे में सोच रहा था, तभी एकाएक

उसके मस्तिष्क में एक विचार कौंधा—'इस विवाह के पीछे कहीं कोई षत्रं तो नहीं है?' उसने पुनः सभी कड़ियों को जोड़ा और सिलसिलेवार सोचने लगा—'सबसे पहले जहरीले सर्प के काटने पर मेरे पिता की मृत्यु हुई। परंतु इसके बारे में केवल क्लेदियस को पता था। फिर कुछ दिनों बाद उन्होंने और मेरी माँ ने विवाह कर लिया। कहीं ऐसा तो नहीं कि मेरे पिता की मृत्यु के पीछे इन दोनों का हाथ हो? कहीं इन्होंने ही तो सर्प बनकर उन्हें नहीं डँस लिया? राजसिंहासन का लोभ अच्छे-अच्छों को बुरा काम करने के लिए विवश कर देता है। अवश्य इन्होंने लोभ में आकर मेरे पिता को मरवा दिया और अब वे इस राज्य को हथिया लेना चाहते हैं।'

हैमलेट जितना सोचता उतना ही विचारों की गुत्थियों में उलझता जाता। अधिक सोचने के कारण दिन-दिन उसका स्वास्थ्य गिरने लगा। शरीर सूखकर काँटे की तरह हो गया, चेहरा पीला पड़ गया, आँखें अंदर की ओर धँस गईं । लोग उसकी हँसी सुनने को तरस गए। उसके स्थान पर अब वह अत्यंत गंभीर और खोया-खोया-सा दिखाई देता था।

एक दिन वह महल के शाही बाग में टहल रहा था कि तभी एक पहरेदार आया और डरते-डरते बोला—"राजकुमार, कुछ दिनों से मैं महाराज को महल में देख रहा हूँ। अवश्य वह उनकी आत्मा है, जो तीन दिन से दिखाई दे रही है। यद्यपि उन्होंने किसी को कुछ नहीं कहा, परंतु उनकी चाल-ढाल से लगता है कि वे किसी को ढूँढ़ रहे हैं।"

यह बात हैमलेट के लिए किसी आश्चर्य से कम नहीं थी। उसके पिता की आत्मा अभी महल में उपस्थित है, यह जानकर जहाँ उसे प्रसन्नता हुई, वहीं वह सोच में पड़ गया। धीरे-धीरे उसे विश्वास हो गया कि हो-न-हो, महाराज उसे ही ढूँढ़ रहे हैं। अवश्य वे उससे कुछ कहना चाहते हैं। अंततः राजकुमार ने पिता से मिलने का निश्चय कर लिया।

उसी रात वह पहरेदारों के साथ उस स्थान पर जा बैठा, जहाँ उसके पिता की आत्मा को भटकते हुए देखा गया था। उसने इस बारे में किसी को कुछ नहीं बताया।

आधी रात का समय था; राजकुमार की आँखों से नींद कोसों दूर थी। तभी एक पहरेदार पास आकर धीरे से बोला, "वह देखिए, राजकुमार! चबूतरे पर महाराज की आत्मा।"

राजकुमार ने जल्दी से चबूतरे की ओर देखा। राजसी पोशाक पहने एक छाया धीरे-धीरे चलती हुई उसकी ओर आ रही थी। चाल-ढाल और वत्रों से राजकुमार पहचान गया कि यह उसके पिता ही हैं। उन्होंने वही पोशाक पहन रखी थी, जो मृत्यु के समय उनके शरीर पर थी। चाँद की रोशनी में वे उसे स्पष्ट नजर आ रहे थे।

वह 'पिताजी' कहकर तेजी से उनकी ओर लपका। पहरेदारों ने उसे रोकने की बहुत कोशिश की, लेकिन वह स्वयं को छुड़वाकर उस ओर बढ़ गया। जब दोनों के बीच कुछ कदमों की दूरी रह गई, तब उस छाया ने उसे एक एकांत कोने की ओर चलने का संकेत किया।

एक पल के लिए हैमलेट का चेहरा पसीने से भीग उठा। वह सोचने लगा—'कहीं वह कोई और प्रेतात्मा तो नहीं, जो उसके पिता के वेश में वहाँ घूम रही है? कहीं वह उसका अहित न कर दे।' वह जहाँ-का-तहाँ रुक गया। तभी उसकी अंतरात्मा बोली, 'राजकुमार, व्यर्थ का संदेह मत करो। इनसे भयभीत होने की कोई आवश्यकता नहीं है। ये तुम्हारे पिता हैं।'

राजकुमार के मन का भय समाप्त हो गया और वह छाया के साथ एक कोने में पहुँचा। छाया ने नजरें उठाकर इधर-उधर देखा। दूर-दूर तक कोई नहीं था, जो उनकी बातें सुन सके। आश्वस्त हो जाने के बाद छाया के मुख से पहला शब्दा निकला—"कुमार! मेरे बेटे!"

एक लंबे अरसे के बाद अपने पिता की स्नेहयुक्त आवाज सुनकर राजकुमार की आँखों में आँसू उमड़ आए, उसका गला रुँध गया। दिल चाहा कि वह दौड़कर पिता से लिपट जाए, उनसे लाड़ करे। परंतु उन्होंने उसे रोक दिया। तब राजकुमार स्वयं को संयत करते हुए बोला, "पिताजी, अभी तक आप इस प्रकार भटक क्यों रहे हैं? कौन सी बात आपकी

मुक्ति में बाधा बन रही है? क्यों आपकी आत्मा बेचैन है? मुझे सबकुछ स्पष्ट रूप से बताइए।''

छाया धीरे से बोली, ''पुत्र, इन सबका एक ही कारण है, और वह कारण है मेरी रहस्यमयी हत्या।''

''हत्या! यह क्या कह रहे हैं आप, पिताजी? चाचाजी ने तो कहा था कि आपकी मृत्यु सर्प के काटने से हुई थी।''राजकुमार ने आश्चर्य में भरकर पूछा।

''कुमार, मेरी मृत्यु सर्प के काटने से नहीं हुई; मेरी हत्या हुई है। तुम्हें यही बात बताने के लिए अब तक मेरी आत्मा भटक रही थी। आज इस रहस्य से परदा उठाकर मेरी आत्मा को शांति मिलेगी।''छाया शांत स्वर में बोली।

''परंतु आपकी हत्या कौन कर सकता है? किसने यह नीच काम किया है? आप मुझे बताइए, उस दुष्ट को मैं स्वयं अपने हाथों से दंडित करूँगा।''राजकुमार उत्तेजित होते हुए बोला।

''शांत हो जाओ, कुमार!यह कार्य आवेश में आकर करने का नहीं है। तुम मन को शांत करके धैर्यपूर्वक मेरी बात सुनो।''

राजकुमार कुछ देर तक आँखें बंद करके स्वयं को शांत करता रहा। फिर उसने पिता से सारी बात बताने के लिए कहा।

तब छाया सत्य से परदा हटाते हुए बोली, ''कुमार, मेरी हत्या करने वाला कोई और नहीं, मेरा अपना ही भाई है। हाँ, मेरी हत्या क्लेदियस ने की है। जिस दिन मेरी मृत्यु हुई, उस दिन मैं सभी दैनिक कार्य निबटाकर शाही बाग में विश्राम कर रहा था। ठंडी हवाओं के कारण मुझे नींद आ गई। उस समय कोई भी मेरे आस-पास नहीं था। अवसर उचित जानकर क्लेदियस वहाँ आया और मेरे कान में विषैले द्रव्य की दो बूँदें डाल दीं। उस द्रव्य के प्रभाव से मेरी नसें जल उठीं और मेरा दिल जोर-जोर से धड़कने के बाद शांत हो गया। इस तरह उसने सबकुछ छीनकर भटकने के लिए मुझे इस लोक में धकेल दिया। कुमार, यदि मुझसे प्यार है तो प्रतिज्ञा करो, तुम क्लेदियस से मेरी मृत्यु का प्रतिशोध अवश्य लोगे। तभी मेरी आत्मा को शांति और मुक्ति मिलेगी। अन्यथा मैं युगों-युगों तक इसी प्रकार भटकता रहूँगा।''

राजकुमार को पहले से क्लेदियस पर शक था। पिता की बात ने उसके शक को यकीन में बदल दिया था। वह प्रतिज्ञा करते हुए बोला, ''पिताजी, क्लेदियस ने आपको मुझसे छीना है। मैं उससे आपकी हत्या का प्रतिशोध लेकर रहूँगा। जब तक मैं प्रतिशोध नहीं लूँगा, तब तक चैन से नहीं बैठूँगा।''

''लेकिन एक बात का ध्यान रखना, कुमार! तुम अपनी माता को क्षमा कर देना। उसने जाने-अनजाने जो पाप किया है, उसका फल उसे स्वयं ईश्वर प्रदान करेंगे।''

इसके बाद छाया वहाँ से अदृश्य हो गई। हैमलेट ने बेचैन होकर पिता को पुकारा, परंतु कोई प्रत्युत्तर नहीं मिला। अंतत: वह सिर झुकाए कक्ष में लौट आया।

हैमलेट ने जो प्रतिज्ञा की थी, वह उसे जल्दी-से-जल्दी पूरा कर लेना चाहता था, जिससे उसके पिता की आत्मा को शांति मिल सके। लेकिन ऐसे कार्य में जल्दबाजी उसकी असफलता का कारण भी बन सकती थी। इसलिए उसने योजनाबद्ध तरीके से इस कार्य को पूरा करने का निश्चय किया।

हैमलेट अत्यंत सरल और सीधे स्वभाव का था। किसी की हत्या का षत्रं रचना तो दूर, वह किसी को बुरा-भला भी नहीं कह सकता था। इसके अतिरिक्त क्लेदियस के गुप्तचरों की भी उस पर कड़ी नजर थी। हैमलेट सतर्क था, इसलिए गुप्तचरों की निगरानी की बात जानता था। उसे सबसे पहले इस निगरानी से छुटकारा पाना था, तभी वह कोई योजना बना सकता था। अत: उसने एक चाल चली और पागलों की तरह व्यवहार करने लगा। उसने ऐसा अभिनय किया कि उसकी चाल-ढाल, व्यवहार और हरकतों को देखकर सभी को उसके पागल होने का विश्वास हो गया।

क्लेदियस को उससे कोई खतरा नहीं रहा। उसे चुनौती देनेवाला पागल हो चुका है, इस विचार ने उसे राजकुमार की

ओर से लापरवाह बना दिया। इसी के चलते उसने गुप्तचरों को भी निगरानी से हटा दिया।

दरबार में एक वजीर था, जिसकी ओफीलिया नाम की एक पुत्री थी। राजकुमार उसे बहुत प्रेम करता था, परंतु ओफीलिया उससे दूर-दूर रहती थी। सभी ने सोचा कि शायद प्यार में मिली असफलता ने ही राजकुमार के होशो-हवास छीन लिये हैं। यह बात हैमलेट के लिए मददगार सिद्ध हो सकती थी। उसने इसका लाभ उठाने का निश्चय कर उसी समय ओफीलिया के नाम एक पत्र लिखा।

पत्र की भाषा बहुत ही उलझी हुई और अटपटी-सी थी। किसी के लिए भी उसे समझना बहुत मुश्किल था। फिर भी उसका सार केवल इतना था कि वह ओफीलिया से बहुत प्रेम करता था और उसी के कारण उसका यह हाल हुआ है। ओफीलिया ने यह पत्र पिता को और उसने क्लेदियस को दिखाया। उसका रहा-सहा संदेह भी जाता रहा। उसने राजकुमार को पूरी तरह से स्वतंत्र कर दिया। अब वह कहीं भी बेरोट-टोक आ-जा सकता था।

हैमलेट ने जैसा सोचा था, उसमें वह पूरी तरह से सफल रहा। अब उसने योजना बनाकर क्लेदियस के विरुद्ध षत्रं रचना आरंभ कर दिया।

उन्हीं दिनों नगर में एक नाटक मंडली आई हुई थी। वह प्रतिदिन जिस नाटक का मंचन करती थी, उसमें एक राजा की हत्या के षत्रं के बारे में दिखाया जाता था। वह दृश्य इतना स्वाभाविक और वास्तविकता के पास प्रतीत होता था कि दर्शकों की आँखें भर आतीं, उनका मन दुखी हो जाता। यह नाटक बड़ा लोकप्रिय हुआ। राजकुमार हैमलेट ने भी एक बार वह नाटक देखा था। उसे देखकर उसे अपने पिता की मृत्यु का दृश्य याद आ गया।

तभी उसे एक विचार सूझा। उसने सोचा—'नाटक मंडली के साथ मिलकर राजा की मृत्यु के दृश्य में फेर-बदल कर दिया जाए और उसे देखने के लिए क्लेदियस को आमंत्रित किया जाए। यदि अपने पाप को लेकर उसके मन में जरा भी पश्चात्ताप हुआ तो उसके हाव-भाव ही उसके गुनाह को प्रकट कर देंगे।'

यह सोचकर उसने नाटक मंडली के सदस्यों को महल में आमंत्रित किया और उनके समक्ष एक प्रस्ताव रखते हुए बोला, ''मैंने एक नाटक लिखा है। मेरी इच्छा है कि आपकी मंडली के अनुभवी कलाकार उसमें मंचन करें। इसके लिए आपको उचित पारिश्रमिक भी दिया जाएगा।''

''राजकुमार, आपके लिखे नाटक में काम करके हम स्वयं को धन्य समझेंगे। लेकिन क्या हम नाटक की कथा संक्षेप में सुन सकते हैं? इससे हमें नाटक को समझने में आसानी रहेगी।''नाटक मंडली के प्रमुख ने प्रसन्न होकर कहा।

राजकुमार नाटक की कथा सुनाते हुए बोला, ''यह नाटक गुंजाक नामक राजा की कहानी है। गुंजाक विएना नगरी का राजा था। वह अपनी रानी बेपतिस्ता को बहुत प्रेम करता था। रानी भी उसे दिलोजान से चाहती थी। राजा का लोशियन नामक एक चचेरा भाई था। एक दिन गुंजान शाही बाग में सो रहा था। उस समय लोशियन ने उसके कान में विषैले द्रव्य की कुछ बूँदें डाल दीं। इसके फलस्वरूप राजा की जान चली गई। फिर लोशियन ने बेपतिस्ता से विवाह कर लिया और उस नगरी का राजा बन बैठा।''

हैमलेट की यह कहानी क्लेदियस के पापकर्म पर आधारित थी। बस बदले थे तो केवल पात्रों के नाम। नाटक मंडली को कहानी अच्छी लगी और उन्होंने उसमें काम करना स्वीकार कर लिया।

निश्चित समय पर नाटक का मंचन हुआ। उसे देखने के लिए क्लेदियस और रानी को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। नाटक के आरंभ में रानी बेपतिस्ता पति के सामने अपने प्यार की कसमें खा रही थी। यह दृश्य देखकर रानी के चेहरे का रंग उड़ गया। वह पसीने से तर-बतर हो गई।

अगले दृश्य में राजा को एक बाग में विश्राम करते दिखाया गया। दूसरी ओर से लोशियन विषैले द्रव्य की शीशी लेकर बाग में दाखिल हुआ। उसने सोते हुए राजा के कान में विष की कुछ बूँदें डाल दीं। अब चौंकने की बारी क्लेदियस की

थी; उसका दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। जिस पाप को वह छिपा हुआ रहस्य समझ रहा था, सामने मंच पर उसका खुले तौर पर मंचन हो रहा था। उसकी साँसें थमने लगीं, दिल सीना फाड़कर बाहर आने के लिए बेताब हो उठा। वहाँ और अधिक देर तक बैठना उसके लिए असंभव हो गया। अत: तबीयत खराब होने का बहाना बनाकर वह रानी सहित वहाँ से चला गया।

इस नाटक के मंचन के पीछे हैमलेट का जो उद्देश्य था, वह पूरा हो चुका था। वह एक कोने में बैठा सब देख रहा था। उसके पास ही उसका एक विश्वसनीय मित्र बैठा था। दोनों ने क्लेदियस और रानी के चेहरों के उड़ते हुए रंग को देखा था। बार-बार घबराकर एक-दूसरे को देखना और माथे से पसीना पोंछना भी उनसे छिपा नहीं था। जब वे दोनों नाटक छोड़कर जा रहे थे, तब हैमलेट ने मित्र से कहा, ''मित्र, क्लेदियस की बेचैनी उसके अंदर के चोर को उजागर कर रही है। इसमें कोई शक नहीं रहा कि उसने ही मेरे पिता की हत्या की है।''

''मैं तुम्हारी बात से पूरी तरह सहमत हूँ। यही तुम्हारे पिता का हत्यारा है।''वह मित्र आवेश में भरकर बोला।

''शांत हो जाओ, मित्र! दीवारों के भी कान होते हैं। यह स्थान इस प्रकार की बातों को करने का नहीं है। हम इस विषय में बाद में बात करेंगे।''हैमलेट ने तेजी से मित्र को चुप करवा दिया।

नाटक समाप्त हुआ और सभी उसकी प्रशंसा करते हुए वहाँ से चले गए।

उसी रात रानी ने एक आवश्यक काम का बहाना करके हैमलेट को अपने कमरे में बुलाया।

हैमलेट को पता था कि नाटक देखने के बाद क्लेदियस और भी सतर्क हो जाएगा तथा अपनी चालें चलना शुरू कर देगा। इसलिए जब उसकी माँ ने उसे अपने कक्ष में बुलाया तो वह समझ गया कि निर्णायक समय पास आ पहुँचा है। उसे अपनी माँ से घृणा होने लगी, क्योंकि वह भी हत्यारे का साथ दे रही थी। लेकिन उसे अपने पिता के शब्द याद थे। इसलिए उसने निश्चय किया कि चाहे कुछ भी हो जाए, वह अपनी माँ का कोई अहित नहीं करेगा।

किसी प्रकार स्वयं को नियंत्रित करके हैमलेट रानी के कक्ष में प्रविष्ट हुआ। उस समय रानी खिड़की के पास खड़ी बाहर की ओर देख रही थी। कदमों की आहट पाकर वह मुड़ी और उसे संबोधित करते हुए बोली, ''आओ कुमार, बैठो।''

''आपको जो कहना हो, ऐसे ही कह दें।''हैमलेट ने रूखे स्वर में कहा।

''तो सुनो, कुमार! तुम जो कुछ कर रहे हो, वह ठीक नहीं है। अपने पिता के विरुद्ध ऐसा कार्य करते तुम्हें लज्जा नहीं आती। क्यों कर रहे हो ऐसा?''इस बार रानी का स्वर थोड़ा कठोर हो गया था।

हैमलेट समझ गया कि रानी का संकेत क्लेदियस की ओर है। उसका मुँह कड़वाहट से भर उठा और वह तीखे स्वर में बोला, ''आप किस पिता की बात कर रही हैं? वह जो वास्तव में मेरे पिता थे या फिर उसकी, जो मेरा पिता बनने की कोशिश कर रहा है?''

रानी उसके पास आकर बोली, ''मैं महाराज क्लेदियस की बात कर रही हूँ। अब वे ही तुम्हारे पिता हैं।''

क्लेदियस के लिए 'पिता' शब्द सुनकर राजकुमार का चेहरा गुस्से से तमतमा उठा। वह मुँह से आग उगलते हुए बोला,''क्लेदियस मेरा पिता कभी नहीं हो सकता। वह मेरे स्वर्गीय पिता का हत्यारा है। उस आस्तीन के साँप को पिता कहने से पहले मेरी जिह्वा जल जाएगी। मेरी तलवार उसका रक्त पीने के लिए तरस रही है। जब तक उस पापी को मैं मौत के घाट नहीं उतारूँगा, तब तक मुझे चैन नहीं मिलेगा।''

राजकुमार का ऐसा रौद्र रूप देखकर रानी भय से थर-थर काँपने लगी। उसे लगा, मानो स्वयं महाराज उसके सामने आकर खड़े हो गए हों। वह कुछ कदम पीछे हटी और तेजी से कक्ष से बाहर जाने के लिए मुड़ी।

लेकिन राजकुमार ने आगे बढ़कर उसका मार्ग रोक लिया और कठोर स्वर में बोला, ''रानी माँ! जाने से पहले आपको मेरे एक प्रश्न का उत्तर देना होगा, अन्यथा मैं आपको यहाँ से बाहर नहीं जाने दूँगा।''

''मैं तेरी माँ हूँ। मुझसे ऐसे बात करते हुए तुझे शर्म नहीं आती! मैं यहाँ से जा रही हूँ। देखती हूँ, तू क्या करता है?''यह कहकर जैसे ही रानी ने आगे कदम बढ़ाया, वैसे ही राजकुमार ने उसका हाथ पकड़ लिया। रानी ने हाथ छुड़ाने की बहुत कोशिश की, लेकिन असफल रही।

राजकुमार का गुस्से से भरा चेहरा देखकर वह पहले ही भयभीत थी। हाथ पकड़ने की घटना से उसका रहा-सहा साहस भी जवाब दे गया। वह सहायता के लिए चिल्लाने लगी। तभी बरामदे में लगे परदे के पीछे से भी 'बचाओ, बचाओ' की आवाजें आने लगीं। यह आवाज किसी पुरुष की थी।

क्लेदियस परदे के पीछे खड़ा होकर उनकी सारी बातें सुन रहा था। लेकिन रानी को खतरे में पड़ा देखकर वह सहायता के लिए सैनिकों को पुकार रहा है। यह सोचकर हैमलेट ने तलवार निकाल ली और रानी को छोड़कर परदे के पास पहुँच गया। फिर उसने बिना परदा हटाए तलवार से उस पर वार कर दिया।

कक्ष में एक चीख गूँजी और फिर धड़ाम से किसी के गिरने की आवाज के साथ सबकुछ शांत हो गया।

'परदे के पीछे छिपा आदमी मारा जा चुका है।'यह सोचकर राजकुमार निश्चिंत हो गया था। वह उस व्यक्ति को देखना चाहता था। उसने आगे बढ़कर परदा एक ओर सरका दिया। जमीन पर ओफीलिया के पिता की लाश पड़ी थी। वह क्लेदियस का विश्वासपात्र था और उसी के कहने पर वहाँ छिपकर उनकी बातें सुन रहा था।

राजकुमार के मुँह से अफसोस भरी आह निकली, ''अनजाने में मैंने इनकी हत्या कर दी। इसके लिए ओफीलिया मुझे कभी माफ नहीं करेगी।''

इसके बाद हैमलेट रानी की ओर मुड़ा। उसके हाथ में खून सनी तलवार देखकर रानी की साँसें उखड़ने लगीं। हालत ऐसी हो गई मानो उसके प्राण निकलने वाले हों। हैमलेट ने तलवार नीचे कर ली और रानी के कंधों पर हाथ रखकर स्नेह भरे स्वर में बोला, ''माँ, तुम्हें मुझसे डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं तुम्हारा पुत्र हूँ; मैंने तुम्हारे अंश से जन्म लिया है। आज भी मैं तुम्हारा उतना ही सम्मान करता हूँ जितना पहले करता था। परंतु माँ, यह सच है कि क्लेदियस ने महाराज की हत्या की है। उसके हाथ महाराज के खून से रँगे हुए हैं। उसने सिंहासन पर अधिकार करने के लिए ही आपसे विवाह किया है। उस जैसे पापी और नीच का साथ देकर आप अपने वंश को कलंकित कर रही हैं।''

राजकुमार की बातें सुनकर रानी की नजरें शर्म से झुक गईं । उसके पास कहने को कुछ भी नहीं बचा था।

हैमलेट ने माता का चेहरा ऊपर उठाया और दीवार पर टँगी महाराज की तसवीर की ओर संकेत करते हुए बोला,''देखो माँ, पिताजी हमारी ओर कितनी उम्मीद भरी निगाहों से देख रहे हैं। वे अपने हत्यारे से प्रतिशोध चाहते हैं। वे चाहते हैं कि हम एक साथ क्लेदियस को उसके किए की सजा दें। इस काम में आप मेरी सहायता करेंगी?''

हैमलेट के मुँह से यह स्नेहपूर्ण शब्द सुनकर रानी की आँखों में आँसू भर आए। उसके मन में ममता का सागर हिलोरें लेने लगा। उसने पुत्र को गले से लगा लिया।

हैमलेट उसे सांत्वना देते हुए बोला,''तुम चिंता मत करो, माँ! मैं क्लेदियस को उसके किए की सजा अवश्य दूँगा। मुझे सिर्फ आपके आशीर्वाद की जरूरत है, जिससे मैं...''

तभी कमरे में एक स्वर गूँज उठा, जिसने राजकुमार की बात को पूरा कर दिया, ''अपने पिता की हत्या का बदला ले सकूँ।''

राजकुमार ने चौंककर स्वर की दिशा की ओर देखा। वहाँ उसके पिता की आत्मा खड़ी हुई थी। वह खुशी से चीख पड़ा,''पिताजी, आप आ गए, पिताजी!''

महाराज की आत्मा शांत स्वर में बोली,''पुत्र, मैं तुम्हें यहाँ तुम्हारे कर्तव्य की याद दिलाने आया हूँ। तुम्हें अपनी प्रतिज्ञा याद है न, कुमार? तुम्हें क्लेदियस से मेरी हत्या का बदला लेना है।''

''पिताजी, मैं यह बात कभी नहीं भूल सकता। अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए मैं अपने प्राणों की आहुति देने से भी पीछे नहीं हटूँगा। उसे अपने पाप का फल अवश्य भुगतना होगा।''राजकुमार उत्तेजित होकर बोला।

''पुत्र! याद रखना, जब तक क्लेदियस जीवित है तब तक मेरी आत्मा को शांति नहीं मिलेगी। मैं इसी तरह यहाँ-वहाँ भटकता रहूँगा। उससे प्रतिशोध ही मेरी मुक्ति का एकमात्र उपाय है।''यह कहकर राजा की आत्मा अदृश्य हो गई।

रानी आश्चर्यचकित होकर कभी राजकुमार को देख रही थी तो कभी उस स्थान की ओर जिस ओर राजकुमार मुँह करके बोल रहा था। न तो उसे वहाँ कोई दिखाई दिया, न ही उसने किसी की आवाज सुनी। परंतु उसे अपने चारों ओर सर्द-सी एक लहर अवश्य महसूस हो रही थी। उसी के कारण वह थर-थर काँप रही थी।

हैमलेट जानता था कि रानी महाराज की आत्मा की उपस्थिति से पूरी तरह अनजान है। इसलिए उसने भी इस विषय में उसे कुछ नहीं बताया। वह केवल इतना ही बोला,''माँ, आप क्लेदियस से सावधान रहना। जो पापी एक हत्या कर सकता

है, उसे दूसरी हत्या करने से कोई डर नहीं लगेगा। अगर उसे पता चल गया कि आप मेरा साथ दे रही हैं तो वह आपको भी जीवित नहीं छोड़ेगा। इसलिए जो कुछ भी करना, सोच-समझकर करना।'' यह कहकर वह कक्ष से बाहर चला गया।

उधर, क्लेदियस को गुप्तचरों द्वारा माता-पुत्र के इस मिलन की खबर मिल गई थी। उसने निश्चय कर लिया कि वह कल ही राजकुमार को विदेश भेज देगा।

दूसरे दिन प्रात:काल उसने हैमलेट को बुलाया और कठोर स्वर में बोला, ''कुमार, कल रात तुमने सबसे वरिष्ठ और वफादार वजीर की हत्या करके हमारे लिए संकट पैदा कर दिया है। इस घटना से प्रजाजन में क्रोध और असंतोष की लहर उठ रही है। इसलिए उचित यही है कि तुम कुछ दिनों के लिए यहाँ से कहीं दूर चले जाओ। मैंने इसका सारा इंतजाम भी कर दिया है। जब यहाँ सबकुछ शांत हो जाएगा, तब तुम वापस लौट आना।''

इसके बाद उसने दो विश्वसनीय अधिकारियों के साथ राजकुमार को जबरदस्ती जहाज पर चढ़ाकर विदेश भेज दिया। अफसरों को विशेष हिदायत दी गई थी कि मार्ग में अवसर देखकर उसे मौत के घाट उतार दिया जाए। राजकुमार उसके इरादों को भली-भाँति समझ रहा था, लेकिन वह विवश था।

परंतु 'जाको राखे साइयाँ, मार सके न कोय।' मार्ग में समुद्री डाकुओं ने जहाज पर आक्रमण कर दिया। दोनों पक्षों में भयंकर युद्ध हुआ, जिसमें दोनों अधिकारी मारे गए। परंतु डाकुओं का सरदार हैमलेट को पहले से पहचानता था। अत: उसने उसे ससम्मान वापस डेनमार्क भेज दिया।

डेनमार्क पहुँचते ही राजकुमार को एक बुरी खबर मिली। पिता की मृत्यु से ओफीलिया को गहरा सदमा पहुँचा था। इस सदमे को सहन न कर सकने के कारण उसने आत्महत्या कर ली। उस समय उसका अंतिम संस्कार किया जा रहा था। इस खबर ने हैमलेट को बुरी तरह से हिलाकर रख दिया। वह विक्षिप्त की तरह तेजी से उस ओर भागा, जहाँ ओफीलिया का शव रखा हुआ था। उसका भाई उसे दफनाने की तैयारी कर रहा था।

उस समय क्लेदियस, रानी तथा अन्य दरबारीगण उसकी अंतिम क्रिया में उपस्थित थे। हैमलेट तेजी से भीड़ को चीरता हुआ आया और ओफीलिया के शव से लिपटकर जोर-जोर से रोने लगा। उसका भाई एक पल के भौचक्का रह गया। फिर उसे याद आया कि इसी ने उसके पिता की हत्या की थी और इसी के कारण आज उसकी बहन उसे छोड़कर चली गई। उसने हैमलेट को पकड़ लिया और लात-घूँसों से उसकी पिटाई करने लगा।

हैमलेट को पिटते देख क्लेदियस मन-ही-मन बहुत खुश हो रहा था। वह चाहता था कि आज उसके रास्ते से हैमलेट नाम का काँटा हमेशा के लिए निकल जाए। परंतु तभी कुछ दरबारियों ने आगे बढ़कर दोनों को अलग-अलग कर दिया। ओफीलिया का भाई क्लेदियस को संबोधित करते हुए बोला, ''महाराज, इसी ने मेरे पिता की हत्या की है। इसी के कारण मेरी बहन ने आत्महत्या की है। इसने मेरा घर उजाड़ दिया है। मैं इसे अपने हाथों से दंड देना चाहता हूँ।''

''तुम्हारे आरोप शत-प्रतिशत सही हैं। परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि इसे तुम इस प्रकार दंडित करो। मैं तुम दोनों के बीच द्वंद्व युद्ध निश्चित करता हूँ। इसमें जो विजयी होगा, उसे ही जीवित रहने का अधिकार होगा।'क्लेदियस ने मन-ही-मन मुसकराते हुए अपना निर्णय दिया।

इस निर्णय के पीछे क्लेदियस का कुटिल दिमाग चल रहा था। वह जानता था कि ओफीलिया के भाई की तुलना में राजकुमार अभी बच्चा है। वह उसका सामना नहीं कर पाएगा। द्वंद्व युद्ध में नकली तलवारों का प्रयोग किया जाता था। लेकिन उसने ओफीलिया के भाई को असली तलवार थमा दी। उस तलवार में तेज जहर लगा हुआ था। यदि युद्ध में राजकुमार बच गया तो उसे मारने के लिए क्लेदियस ने एक और षत्रं रचा था। उसने अपने पास एक शाही प्याला रखा, जिसमें शरबत के साथ-साथ विषैले द्रव्य की कुछ बूँदें भी थीं। युद्ध आरंभ होने से पूर्व उसने घोषणा की कि युद्ध में विजयी होनेवाले को वह सम्मान के रूप में शरबत का शाही प्याला पेश करेगा। उसके इस षत्रं से रानी भी अनजान

थी।

निर्धारित समय पर युद्ध आरंभ हुआ। उसे देखने के लिए सारा नगर रंगभूमि में उमड़ आया था। पहले तो हैमलेट ओफीलिया के भाई पर हावी रहा, लेकिन धीरे-धीरे उसने हैमलेट पर प्रहार करने आरंभ कर दिए। और फिर उसने उस पर एक प्राणघातक वार किया। हैमलेट ने खुद को बचाने का भरसक प्रयत्न किया, परंतु फिर भी तलवार ने उसके शरीर पर घाव बना डाला। जैसे ही विष हैमलेट के शरीर में गया, उसे भयंकर जलन होने लगी। वह समझ गया कि क्लेदियस ने उसके साथ छल किया है। जहर तेजी से उसके शरीर में फैल रहा था। उसे अपनी मौत दिखाई देने लगी। परंतु मरने से पहले वह अपनी प्रतिज्ञा पूरी करना चाहता था, अत: उसने ओफीलिया के भाई से तलवार छीनकर उसी के सीने में घोंप दी।

फिर खून सनी तलवार लेकर उसने क्लेदियस की ओर देखा। उसका यह रूप देखकर रानी भयभीत हो गई। उसने घबराकर शाही प्याला उठाया और सारा शरबत पी लिया। जहर ने अपना असर दिखाया और रानी तड़पते हुए वहीं ढेर हो गई।

माँ को तड़प-तड़पकर प्राण त्यागते देख हैमलेट को पिता की मृत्यु याद आ गई। इस पापी ने उसे इसी प्रकार तड़पा-तड़पाकर मारा था। वह तेजी से क्लेदियस की ओर लपका। जहर के असर के कारण उसके पैर बुरी तरह लड़खड़ा रहे थे। लेकिन गिरने से पहले वह किसी भी तरह क्लेदियस तक पहुँच जाना चाहता था। उसने सारी शक्ति एकत्रित की और सिंहासन के सामने जा पहुँचा। क्लेदियस ने भागने की कोशिश की, परंतु तब तक बहुत देर हो चुकी थी। हैमलेट ने उसके सीने में तलवार घोंप दी। क्लेदियस भयंकर चीत्कार करते हुए जमीन पर गिर पड़ा और कुछ ही देर में उसने प्राण त्याग दिए।

हैमलेट के चेहरे पर संतोष और प्रसन्नता के भाव उतर आए। आखिरकार उसने अपने पिता की मृत्यु का प्रतिशोध ले लिया था। अब वह शांतिपूर्वक मर सकता था। उसे विश्वास था कि क्लेदियस की मृत्यु के साथ ही उसके पिता की आत्मा मुक्त हो गई होगी। फिर उसने भी अपने प्राण त्याग दिए।

❑

# राजा : तिमन

जैसे कुछ लोग अपनी कंजूसी के लिए प्रसिद्ध होते हैं, उसी प्रकार कुछ लोगों को फिजूलखर्ची में महारत हासिल होती है। ऐसे लोगों में एथेंस नगर के राजा तिमन का नाम भी सम्मिलित था। उसकी गिनती ऐसे उदार लोगों में होती थी जो धन को पानी की तरह बहाया करते थे। एक अशर्फी के स्थान पर वह सौ अशर्फियाँ और सौ अशर्फियों के स्थान पर हजार अशर्फियाँ लुटाता था। इससे भी उसे संतोष नहीं था। वह अकसर सोचा करता कि ईश्वर ने उसे दो हाथ क्यों दिए? उसके हजार हाथ होने चाहिए थे। वह इतना धन लुटाता था कि लेनेवाले थक जाते थे, लेकिन उसका हाथ नहीं रुकता था। जहाँ शहद होता है, वहाँ मधुमक्खियाँ आ ही जाती हैं। कुछ ऐसा ही तिमन के साथ हुआ। उसकी दरियादिली देखकर उसके आस-पास चापलूसों की भीड़ लग गई। ये लोग उसकी चापलूसी कर अपना उल्लू सीधा करते रहते थे।

राज्य में अनेक लोग ऐसे भी थे, जो वर्षों से निर्धनता का जीवन जी रहे थे। लेकिन तिमन की चापलूसी करके कुछ ही दिनों में उनकी गिनती धनवानों में होने लगी थी। जो व्यक्ति फिजूलखर्ची में विश्वास करते थे, तिमन उन्हें बहुत पसंद करता। उसका दरबार भी फिजूलखर्च करनेवाले लोगों से भरा पड़ा था। जो जितना अधिक फिजूलखर्च था, तिमन उसे उतना ही उदार समझता था। वह कितना मूर्ख और अक्ल का अंधा था, इसका पता इस बात से ही चलता है कि उसका प्रधानमंत्री एक ऐसा व्यक्ति था जिस पर अनेक लोगों का कर्ज चढ़ा हुआ था। वह निन्यानबे नाइयों से मुफ्त में हजामत बनवा चुका था।

उपप्रधानमंत्री की चापलूसी की भी कई बातें प्रसिद्ध थीं। कहते हैं, उसने पहली बार दरबार में आकर तिमन को सलाम किया और उसे एक छंद सुनाया। इसमें उसने तिमन की दयालुता, दानवीरता और दरियादिली की भरपूर प्रशंसा की थी। इस चापलूसी भरे छंद को सुनकर तिमन वाह-वाह कर उठा। उसने आगे बढ़कर उसका हाथ पकड़ा और उसे उपप्रधानमंत्री की कुरसी पर आसीन कर दिया।

तिमन के दरबार में ऐसी घटनाएँ प्रतिदिन घटती रहती थीं। जरा सी चापलूसी के बदले कई भिक्षुकों को उसने अपना दरबारी बना लिया था।

एक बार की बात है। तिमन दरबार में बैठा था कि तभी वहाँ एक युवक आया और फरियाद करते हुए बोला, ''महाराज की जय हो! महाराज, मेरा नाम कड़का है। मैं एक सेठ की बेटी से प्रेम करता हूँ और उससे विवाह करना चाहता हूँ। उसकी शर्त है कि वह अपनी बेटी का विवाह उसके साथ करेगा जो उससे अधिक धनवान् होगा, जिसके पास सुख के सभी साधन होंगे। किंतु महाराज, मेरी आर्थिक स्थिति इतनी दयनीय है कि शर्त पूरी करने की बात तो दूर, मैं अपना भरण-पोषण भी ठीक से नहीं कर सकता। अब आप ही मेरी सहायता कीजिए। मैं बड़ी उम्मीद लेकर आपके पास आया हूँ।''

तिमन प्रसन्न होकर बोला, ''वाह नौजवान, क्या दिल पाया है तुमने! तुम्हारे साहस की मैं दिल से प्रशंसा करता हूँ। तुम्हारे लिए मैं अपना सारा खजाना और राज्य लुटाने को तैयार हूँ। जाओ, तुम्हें जितना धन चाहिए, खजांची से ले लो और धूमधाम से विवाह करो। तुम्हारे विवाह में किसी प्रकार की कोई अड़चन नहीं आएगी। विवाह के बाद तुम मेरे पास अवश्य आना। मुझे तुम जैसे साहसी और उदार लोगों की बहुत आवश्यकता है।''

आज्ञा पाते ही युवक उसी समय खजांची के पास गया और भरपूर धन लेकर चला गया।

यह अकेली ऐसी घटना नहीं थी। ऐसे हथकंडे अपनाकर न जाने अब तक कितने फकीर और निर्धन मालामाल हो चुके थे। स्थिति यह थी कि खजाना दिन-प्रतिदिन तेजी से खाली होता जा रहा था।

एक बार दूसरे देश का एक व्यापारी दरबार में उपस्थित हुआ। उसने तिमन को एक घोड़ा भेंट किया। चूँकि तिमन राजा था, इसलिए वह भी उस व्यापारी को उपहारस्वरूप कुछ देना चाहता था। उसने खजांची को पचास हजार रुपए लाने की आज्ञा दी।

खजांची हाथ जोड़कर बोला, ''महाराज, निरंतर लोगों को दान देने के कारण राजकोष पूरी तरह से खाली हो चुका है। पचास हजार तो क्या, इन्हें देने के लिए इस समय उसमें एक रुपया भी नहीं है।''

''क्या बकते हो? राजकोष खाली कैसे हो गया? इस व्यापारी को भेंट में अब हम क्या देंगे?'' तिमन ने चौंकते हुए कहा।

वह कुछ देर तक माथे पर हाथ रखकर सोचता रहा। फिर उसके होंठों पर मुसकान उभर आई। वह अभिमान से भरकर बोला, ''ठीक है, तुम इसी समय शाही संपत्ति का कुछ अंश बेच दो। उससे जो धन प्राप्त हो, उसे इस व्यापारी को हमारी ओर से पुरस्कारस्वरूप प्रदान किया जाए।''

खजांची हाथ जोड़कर नम्रतापूर्वक बोला,''क्षमा करें, महाराज! शाही संपत्ति का अधिकांश भाग पहले ही जरूरतमंदों और याचकों में दानस्वरूप बाँटा जा चुका है। अब शाही संपत्ति का इतना भी टुकड़ा नहीं बचा कि उसे बेचकर व्यापारी को पचास रुपए भी दिए जा सकें।''

''नहीं! क्या शाही संपत्ति का इतना भाग बेचा जा चुका है?'' तिमन पुन: चौंकते हुए बोला।

तिमन धर्मसंकट में फँस गया। वह व्यापारी को पचास हजार रुपए देने की घोषणा कर चुका था। इसलिए बहुत सोच-विचार के बाद उसने खजांची से कहा, ''जाओ, नगर के किसी भी धनी से पचास हजार रुपए का ऋण लेकर इस व्यापारी को मेरी ओर से दे दो। मेरा नाम सुनकर कोई भी धन देने से इनकार नहीं करेगा।''

खजांची सर्वप्रथम नगर के प्रसिद्ध अमीर के पास गया। उसका नाम लूशियस था। खजांची ने उसे सारी बात बताकर ऋण देने के लिए कहा। लूशियस होंठों पर कुटिल मुस्काराहट लाते हुए बोला,''यह मेरा सौभाग्य है कि महाराज ने मुझे इस तुच्छ सेवा के लिए चुना। उनका कार्य करके मुझे अपार प्रसन्नता होती, परंतु आपने आने में देर कर दी। आज ही मैंने अपना सारा धन व्यापार में लगा दिया है। इस समय देने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है। मैं उनके उपकारों के बोझ तले दबा हुआ हूँ, लेकिन चाहकर भी अनके लिए कुछ नहीं कर सकता। आप उनसे मेरी ओर से क्षमा माँग लेना और कहना कि जैसे ही मेरे पास धन आएगा, मैं उसे लेकर स्वयं उनकी सेवा में उपस्थित हो जाऊँगा।''

लूशियस ने बहाना बनाकर खजांची को विदा कर दिया।

खजांची एक दूसरे सेठ के पास गया। यह सेठ पहले बहुत निर्धन था। तिमन की चापलूसी करके आज वह नगर का धनी बना हुआ था। ऋण देने की बात सुनते ही मानो उसे साँप सूँघ गया। वह खजांची से बोला,''मित्र, मेरे पास भला इतना धन कहाँ है? मैं आपकी कोई सहायता नहीं कर सकता। आप राजा साहब से कह देना कि मैं घर नहीं था। आपकी बड़ी कृपा होगी।''

इस प्रकार एक-एक कर खजांची नगर के सभी अमीरों के पास गया और उनसे सहायता की प्रार्थना की। लेकिन कल तक जो तिमन की जी-हुजूरी किया करते थे, आज उन्होंने उसकी ओर से मुँह फेर लिया था। अंत में थक-हारकर खजांची दरबार में लौट आया।

''सेवक, तुम ऋण ले आए? मेरे किस प्रिय ने धन दिया है?'' तिमन ने प्रश्न किया।

खजांची थके स्वर में बोला,''महाराज, सर्प केवल डस सकते हैं, उनसे मित्रता या उदारता की उम्मीद करना मूर्खता है। मैंने नगर के प्रत्येक धनी का द्वार खटखटाया, लेकिन कोई भी सहायता के लिए तैयार नहीं हुआ। सभी के पास कोई-न-कोई बहाना तैयार था। ऋण का नाम सुनते ही सभी ने मुँह मोड़ लिया।''

‘‘क्या कह रहे हो तुम? होश में तो हो? किसी ने भी तुम्हें ऋण नहीं दिया? सबने आँखें फेर लीं?’’ तिमन आश्चर्य से बोला।

‘‘जी महाराज! सब भाग्य का खेल है।’’खजांची ने सिर झुकाकर उत्तर दिया।

तिमन के पैरों तले मानो जमीन खिसक गई हो। क्रोध की अधिकता से उसकी आँखों में खून उतर आया। वह हाथों में तलवार लेकर एक-एक का सिर काट डालना चाहता था। उसका दिल बार-बार चीख रहा था,‘मेरे टुकड़ों पर पलनेवाले लालची कुत्तो! क्या मेरे उपकारों का यही बदला है? क्या इसी दिन के लिए तुम मेरी चापलूसी, मेरी खुशामद किया करते थे? क्या मेरे लिए कहे जानेवाले तुम्हारे प्रशंसायुक्त शब्द मात्र धन हथियाने के साधन थे? मैंने अपना सारा धन तुम पर न्योछावर कर दिया, किंतु तुम ऐसे दगाबाज निकले कि मुझसे ही आँखें चुराने लगे। मैं तुम्हें इसकी सजा अवश्य दूँगा। तुम्हें इतनी आसानी से क्षमा नहीं करूँगा।’

यह सोचकर तिमन सिंहासन से उठा और अपने कक्ष में चला गया।

दो दिन बाद नगर में उत्सव का-सा वातावरण था। नगर के सभी धनवान् बड़े उत्साहित थे; प्रसन्नता उनके चेहरों से टपक रही थी। आखिर प्रसन्न क्यों नहीं होते, महाराज ने उन्हें दावत पर जो आमंत्रित किया था। इसकी घोषणा एक दिन पहले ही हो चुकी थी। इस आमंत्रण से चापलूसों की बाँछें खिली हुई थीं। चापलूसी करके तिमन से धन प्राप्त करने का उन्हें एक और सुनहरा अवसर मिल रहा था। वे बेसब्री से दावत के दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे।

इस दावत में नगर के धनिकों के साथ-साथ तिमन के मित्र और पुराने दरबारी भी आमंत्रित थे। इनमें वे लोग भी सम्मिलित थे, जिन्होंने तिमन को ऋण देने से इनकार कर दिया था।

निश्चित समय पर अतिथि एक-एक कर अतिथिशाला में एकत्र होने लगे। उन्हें उम्मीद थी कि स्वभाव के अनुसार तिमन उन्हें कीमती उपहारों से सम्मानित करेगा, रत्न-आभूषण प्रदान करेगा। जिन्होंने ऋण देने से इनकार किया था, वे सोचने लगे कि ‘कल यदि हम थोड़ा धन देकर तिमन की सहायता कर देते तो आज हमें सबसे अधिक उपहार प्राप्त होते।’ उन्हें इस बात का मलाल था।

कुछ परस्पर परामर्श करने लगे,‘‘तिमन को प्रसन्न करना बहुत आसान है। उसे कीमती ईरानी कालीन अथवा एक अरबी घोड़ा उपहार में देकर दो-चार तारीफ के शब्द बोल दो। बस, इतने से ही खुश होकर वे कल की सारी बात भूल जाएँगे और हमें मालामाल कर देंगे।’’

अभी बातचीत का दौर चल ही रहा था कि तभी कक्ष में तिमन ने प्रवेश किया और आसन पर आकर बैठ गया। फिर उसका संकेत पाकर नौकर हाथी दाँत की विशाल मेज पर भोजन की तश्तरियाँ और प्यालियाँ लाकर रखने लगे। व्यंजनों के सभी बरतन कपड़ों से ढके हुए थे। उपस्थित अतिथिगण कपड़ों से ढके इन बरतनों में स्वादिष्ट व्यंजनों की कल्पना कर रहे थे। मसालेदार पुलाव, कबाब, मिठाइयाँ, शराब आदि के बारे में सोच-सोचकर उनके मुँह में पानी आने लगा। उनकी भूख बढ़ने लगी।

तिमन ने भोजन आरंभ करने का संकेत किया। अतिथियों ने शीघता से कपड़े हटाकर बरतनों को अपनी ओर खींचा। लेकिन भोजन की ओर देखते ही वे ठिठक गए। उनकी आँखें फटी-की-फटी रह गईं ।

सोने-चाँदी के बरतनों के स्थान पर प्रत्येक अतिथि के सामने मिट्टी की दो-दो प्यालियाँ रखी हुई थीं। उनमें से एक प्याली में हड्डी और दूसरी प्याली में थोड़ा सा पानी था। सभी अचंभे से तिमन की ओर देखने लगे।

तिमन अपने आसन से उठा और चिंघाड़ते हुए बोला,‘‘तुम सब रुक क्यों गए? भोजन क्यों नहीं करते? जब मेरे पास खिलाने के लिए स्वादिष्ट भोजन था, तब तुमने पेट भरकर खाया। लेकिन आज जब मेरे पास केवल ये हड्डयाँ और पानी हैं तो इन्हें खाने से पीछे क्यों हट रहे हो? खाओ इन्हें और अपनी भूख शांत करो।’’

आज तक तिमन का यह रौद्र रूप किसी ने नहीं देखा था। वे समझ गए कि यह उनकी कृतघ्नता का असर है। उन्होंने नजरें नीची कर लीं और जहाँ अवसर मिला, उठकर भाग गए।

यह तिमन की अंतिम दावत थी।

इस घटना ने तिमन को गहरे शोक, निराशा और हताशा के गर्त में डुबो दिया। हर व्यक्ति उसे स्वार्थी नजर आने लगा। उसे सबसे घृणा हो गई। अंततः उसने इस बनावटी और स्वार्थी दुनिया को त्यागने का निश्चय कर लिया। एथेंस में एक भी पल रुकना उसके लिए असहनीय हो गया। वह जल्दी-से-जल्दी वहाँ से दूर चला जाना चाहता था।

उसे एथेंस से इतनी घृणा हो गई थी कि नगर से बाहर निकलते ही उसने शरीर से सारे वत्र उतार फेंके और नगर की प्राचीरों को संबोधित करते हुए बोला,"हे प्राचीरो! इन स्वार्थी कुत्तों की रक्षा करने की अपेक्षा तुम ध्वस्त हो जाओ। इस नगर की त्रियाँ एवं कुँवारी लड़कियाँ पथभष्ट और चरित्रहीन हो जाएँ; संतानें अपने माता-पिता की शत्रु हो जाएँ; लोग एक-दूसरे के खून के प्यासे हो जाएँ। दरबारी पदच्युत हो जाएँ। इस नगर का विनाश हो जाए। इससे अच्छा तो वह जंगल है, जहाँ रहनेवाले जानवर इन स्वार्थी भेड़ियों से अच्छे होते हैं।"

तिमन ने नगर छोड़ने का निश्चय कर लिया था, इस बात से दरबारी अनजान थे। उनमें कुछ ऐसे भी थे, जो उसके प्रति वफादार थे। एकाएक उसके महल से चले जाने से वे चिंतित हो उठे। उन्होंने कल्पना तक नहीं की थी कि स्वार्थी और धोखेबाज लोगों के दुर्व्यवहार से तिमन के दिलो-दिमाग पर गहरी ठेस लगेगी और वह सबकुछ त्यागकर चला जाएगा। वे मन-ही-मन उसके चापलूस और स्वार्थी मित्रों एवं दरबारियों को कोस रहे थे।

इन्हीं लोगों में फ्लेवियस नामक एक दरबारी भी था, जो तिमन का निकटतम और विश्वसनीय व्यक्ति था। वह बड़ा सभ्य और वफादार था। तिमन के अचानक कहीं चले जाने से वह शोकातुर हो गया और बार-बार सोचने लगा—'क्या भलाई का यही परिणाम भुगतना पड़ता है? क्या दूसरों की सहायता करना अपराध है? मेरे मालिक ने मुसीबत में फँसे लोगों की हमेशा सहायता की; आवश्यक धन और वस्तुएँ देकर उनकी जरूरतें पूरी कीं। लेकिन इसका उन्हें क्या फल मिला? आज उनकी इनसानियत और दयालुता ही उनकी शत्रु बन गई। न जाने वे कहाँ भटक रहे होंगे? किसी को भी उनकी चिंता नहीं है; सभी निश्चिंत होकर हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं। लेकिन मैं ऐसा नहीं होने दूँगा। मैं स्वयं अपने मालिक को ढूँढूँगा और आजीवन उनकी सेवा करूँगा। मैं उनका ऋण कभी नहीं चुका सकता। परंतु ऐसा करके शायद मैं अपने सेवक होने का कर्तव्य पूरा कर सकूँ।'

यह सोचकर फ्लेवियस तिमन को ढूँढ़ने निकल पड़ा।

इधर, भटकते-भटकते तिमन समुद्र के किनारे जा पहुँचा। वहाँ के शांत और सुंदर वातावरण ने उसे मोहित कर लिया। वह वहीं कुटिया बनाकर रहने लगा। भोजन के लिए वह जंगल की जमीन खोदता और कंद-मूल खाकर पेट भर लेता था।

इसके अतिरिक्त अपने दरबारियों, मित्रों और नगर के सेठों को कोसना उसका मुख्य कार्य था। उसे सबसे घृणा हो गई थी। वह उनके विनाश के लिए लगातार भगवान् से प्रार्थना करता था। उसके जीवित रहने का एकमात्र उद्देश्य था—एथेंस का विनाश। मरने से पूर्व वह उसका विनाश देख लेना चाहता था।

एक बार भोजन की तलाश में वह जमीन खोद रहा था कि सहसा उसे स्वर्ण के कुछ टुकड़े मिले। उसे देखते ही तिमन के चेहरे पर दर्द उमड़ आया। इसी स्वर्ण के लिए उसे उसके साथियों और दरबारियों ने उसे धोखा दिया था, उसके साथ विश्वासघात किया था। इसी स्वर्ण ने लोगों के बीच उसे उपहास का पात्र बनाया था। उसका मन घृणा से भर उठा। अब उसके लिए उनका कोई मोल नहीं था। स्वार्थी मित्रों और चापलूस दरबारियों को याद रखने के लिए उसने कुछ स्वर्ण अपने पास रखा और शेष पुनः जमीन में दबा दिया।

एक दिन तिमन को ढोल-नगाड़ों की आवाज सुनाई दी। आवाज की दिशा में देखने पर उसे एक घुड़सवार सैनिक आता दिखाई दिया। उसके साथ दो सुंदर त्रियाँ और कुछ सैनिक थे। यह सवार उसका मित्र कैप्टन एलसिविडस था, जिसे किसी बात से नाराज होकर तिमन ने ही एथेंस से बाहर निकाल दिया था।

तिमन एक आदिवासी की तरह दिखाई दे रहा था, इसलिए एलसिविडस उसे पहचान नहीं सका। साथ ही उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि तिमन उसे ऐसी स्थिति में मिल सकता है।

उसने तिमन का परिचय पूछा।

तिमन कठोर स्वर में बोला,''मैं भी तुम्हारी तरह एक दुष्ट हूँ। चले जाओ यहाँ से। मैं किसी भी इनसान की सूरत नहीं देखना चाहता।''

आवाज सुनते ही एलसिविडस तिमन को पहचान गया। उसकी ऐसी दयनीय और करुण हालत देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह पास आकर बोला,''तिमन, मेरे मित्र! तुमने यह क्या हालत बना रखी है? तुम यहाँ क्या कर रहे हो?''

तिमन दूर हट गया और गुस्से में भरकर बोला, ''मुझे अकेला छोड़ दो। जाओ और जाकर एथेंस की धरती को खून से लाल कर दो। अपनी तलवार से सभी स्वार्थी लोगों के सिर काट दो!''

एलसिविडस को समझते देर न लगी कि तिमन अपना मानसिक संतुलन खो बैठा है। वह पुन: स्नेह भरे स्वर में बोला, ''मित्र, तुम्हारी यह दशा कैसे हुई? मुझे बताओ, मैं तुम्हारे शत्रुओं से अवश्य प्रतिशोध लूँगा।''

''मैं अपनी इस दुर्गति का स्वयं जिम्मेदार हूँ। मेरी दयालुता और इनसानियत ही मेरे शत्रु बन गए। दूसरों को देते-देते मैंने अपना सबकुछ गँवा दिया। और जब मुझे धन की आवश्यकता पड़ी तो सभी ने आँखें फेर लीं।''तिमन आँसू बहाते हुए बोला।

उसकी दयनीय हालत देखकर एलसिविडस का मन भर आया। उसने एक थैली निकाली और तिमन को पकड़ाते हुए बोला, ''मित्र, यह कुछ धन है। इसे अपने पास रख लो। जरूरत पड़ने पर यह तुम्हारे काम आएगा।''

तिमन उत्तेजित होकर बोला, ''मुझे तुम्हारा धन नहीं चाहिए। दूर चले जाओ मेरी नजरों से । मैं तुम्हें देखना तक नहीं चाहता।''

''मित्र! जानते हो, इस समय मैं सेना लेकर एथेंस पर चढ़ाई करने जा रहा हूँ। जल्दी ही मैं और मेरे सैनिक एथेंस को मिट्टी में मिला देंगे।''एलसिविडस ने सोचा था, शायद यह समाचार सुनकर तिमन दुखी होगा।

परंतु तिमन के चेहरे पर प्रसन्नता उभर आई। उसने जेब से स्वर्ण के टुकड़े निकाले और एलसिविडस को देते हुए बोला,''मेरे पास यह कुछ स्वर्ण है। तुम इसे अपने सैनिकों में बाँट दो और उन्हें आदेश दे दो कि वे एथेंस में किसी को भी जीवित न छोड़ें। उनकी तलवारें एक बार उठें तो एथेंस-वासियों का नाश करके ही नीचे आएँ।''

''जल्दी ही एथेंस को जीतने के बाद मैं तुमसे भेंट करने आऊँगा।''—यह कहकर एलसिविडस सेना सहित वहाँ से चला गया।

उसके जाने के बाद तिमन पुन: जमीन खोदने लगा। तभी वहाँ एपेमेंटस नामक दार्शनिक आ धमका। वह तिमन को पहचानता था। वह उस पर व्यग्ंय कसने लगा। तिमन ने भला-बुरा कहते हुए उसे मारने के लिए पत्थर उठा लिया। एपेमेंटस सिर पर पैर रखकर भागा।

उधर, एलसिविडस को सेना सहित आते देख एथेंस के दरबारियों ने घुटने टेक दिए और सर्वसम्मति से उसे अपना राजा घोषित कर दिया। इस प्रकार बिना लड़ाई किए एथेंस पर एलसिविडस का अधिकार हो गया। इसके बाद उसने एक सेवक को तिमन का पता लगाने के लिए भेजा।

सेवक ने कुटिया और उसके आस-पास का सारा क्षेत्र छान मारा, परंतु तिमन कहीं भी न मिला। अंतत: उसकी दृष्टि

एक कब्र पर पड़ी। कब्र के ऊपर कुछ लिखा हुआ था। सेवक पढ़ना-लिखना नहीं जानता था, इसलिए उसने मोम द्वारा उस लेख की छाप उतार ली और वापस लौटकर एलसिविडस को छाप सौंप दी।

एलसिविडस उसे पढ़ने लगा। उस पर लिखा था—'इस स्थान पर एक अभागे और घृणित व्यक्ति को दफनाया गया है, जिसका नाम तिमन था। उसने जीवन भर मनुष्य और मनुष्य के नाम से घृणा की। जो भी व्यक्ति स्वार्थी, नीच और बेईमान है, महामारी उसका अंत कर दे। यहाँ से निकलनेवालो, अब तुम मुझे दुत्कारो, परंतु यहाँ रुकने की मत सोचना।'